रक्षक

छः माही पत्रिका प्रथम अंक, अप्रैल–सितम्बर 2016

कीटनाशक, फंगसनाशक, शाकनाशी, बीज, उर्वरक, बॉयो पेस्टिसाइडस, सूक्ष्म पोषक तत्व

हि इ लि

समृद्धि हेतु सुरक्षा

हिन्दुस्तान इन्सेक्टिसाइड्स लिमिटेड

(भारत सरकार का उद्यम)

माननीय केन्द्रीय मंत्री श्री अनन्त गीते, भारी उद्योग एवं लोक उद्यम मंत्रालय, भारत सरकार के कर–कमलों से श्री एस.पी मोहन्ती, अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक, एच.आई.एल, ब्यूरोक्रेसी टूडे–उत्कृष्ट कॉरपोरेट सामाजिक जिम्मेदारी पुरस्कार (सीएसआर एक्सीलेंस अवॉर्ड) प्राप्त करते हुए।

अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक महोदय गणतंत्र दिवस के अवसर पर कोच्चि यूनिट में कार्मिकों को संबोधित करते हुए

अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक महोदय गणतंत्र दिवस के अवसर पर कोच्चि यूनिट में ध्वजारोहण करते हुए ।

विश्व हिन्दी परिषद एवं राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के संयुक्त तत्वाधान में दिनांक 14.09.2016 को आयोजित हिन्दी दिवस समारोह के अवसर पर माननीय गृह राज्य मंत्री, भारत सरकार श्री किरेन रिजीजू और माननीय सांसद श्री मुरली मनोहर जोशी एवं श्री अश्विनी कुमार चौबे के कर–कमलों से हिन्दी "गौरव पुरस्कार" प्राप्त करते हुए श्री एस.पी मोहन्ती, अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक, एच.आई.एल।

माननीय उत्पाद मंत्री, केरल सरकार श्री के. बाबू से सुरक्षा पुरस्कार प्राप्त करते हुए उद्योगमण्डल यूनिट प्रमुख श्री एम. एस. अनिल एवं श्री नटराजन पी. आर, सुरक्षा प्रबन्धक एवं अन्य अधिकारीगण

फिक्की इंडिया केम–2016 द्वारा कंपनी को जनता की धारणा को बदलने के सराहनीय कार्य के लिए सचिव, रसायन और पेट्रो रसायन विभाग, श्री अनुज कुमार विशनोई के द्वारा सम्मानित किया गया

तमिलनाडु और असम के पूर्व राज्यपाल डॉ. भीष्म नारायण सिंह द्वारा दिनांक 09.06.2016 को श्री एस.पी. मोहन्ती, अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक, हिन्दुस्तान इन्सेक्टिसाइड्स लिमिटेड को उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन और सराहनीय सेवा के लिए भारत ज्योति अवार्ड से सम्मानित किया गया

टाइम्स एसेंट द्वारा कंपनी को 1 सितम्बर, 2016 को नव प्रवर्तनशील, एच. आर. प्रेक्टिस के लिए शीर्ष 50 सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में शामिल होने पर पुरस्कार प्रदान किया गया

समृद्धि हेतु सुरक्षा

संरक्षक

श्री एस.पी. मोहन्ती
अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक

संपादक मंडल

श्री पी.सी. सिंह

श्री सुजीत कुमार

श्री आनन्द स्वरूप शर्मा

श्री अनिल यादव

डा. विशाल चौधरी

श्री राजेन्द्र थापर

श्री जे.सी. जजोरिया

श्री राजेन्द्र सिंह रावत

श्रीमती शान्ति ध्रुव

श्री ए.एन. सिंह

श्री एस.एन. नान्दल

श्री अनिल सूद

अनुक्रमणिका

- संदेश– माननीय रसायन एवं उर्वरक मंत्री – श्री अनन्त कुमार 01
- संदेश– माननीय राज्यमंत्री, रसायन और उर्वरक मंत्रालय – श्री मनसुख एल. मांडविया 02
- संदेश– सचिव रसायन एवं पेट्रो रसायन विभाग – श्री अनुज कुमार बिश्नोई 03
- संदेश– संयुक्त सचिव रसायन एवं पेट्रो रसायन विभाग – श्री समीर कुमार बिश्वास 04
- संरक्षक की कलम से – श्री एस.पी. मोहन्ती 05
- संपादकीय – श्रीमती शान्ति ध्रुव 06
- हिन्दुस्तान इन्सेक्टिसाइड्स लिमिटेड की भारत की प्रगति में भागीदारी – श्री आनन्द स्वरूप शर्मा 07
- बीज उत्पादन एवं विपणन के क्षेत्र में एक उभरती हुई संस्था – श्री अनिल यादव 08
- भारत में वेक्टर नियंत्रण के लिए डी.डी.टी का प्रयोग – श्री राजेन्द्र थापर 10
- शहादत (कव्वाली) – राकेश मोहन 11
- बादल – खुशी और गम – रामदास गायधने 12
- हिन्दी भारत का स्वाभिमान – अनिता वर्मा 13
- हिन्दी अनुवाद / टंकण में सहायक सॉफ्टवेयर / टूल्स 15
- हम भारत के वासी सुविचार – गायकर राजिव पांडुरंग 17
- सिमटते परिवार – कंचन सिंह 18
- भगवान बुद्ध की अमर–वाणी – श्री एन. एम. वाघमारे 18
- हाज़िर हूं मी लार्ड – प्रतिभा रामचंद्र पाटिल 19
- बेटी हिंदी से कर ले प्यार – विजय कुमार गांधी 20
- हार्दिक बधाई 21
- गणेश–गुणवान आंखों को स्वस्थ रखने के उपाय – श्री नेत्रपाल सिंह 22
- सभी महिलाओं को समर्पित 24
- यहाँ कूड़ा कचड़ा फेंक देना दंडनीय – सी. वी. राषीद 24
- रब को देखा है मेरी अर्थी उठा कर चलेंगे – आयुषी 26
- प्रधान कार्यालय में मनाए गए हिन्दी पखवाड़े की रिपोर्ट 27
- राष्ट्रभाषा – अशोक कुमार राव 29
- दबाव – खुशजीत कौर 30
- राष्ट्र की उन्नति के लिये कामगारों का कर्तव्य – बापट महादेव वासुदेव 31
- सावधान रहना है या गाफिल – 32
- दान का महत्व –
- यात्रा संस्मरण – धर्मा मोशल 33
- सुरक्षा और हम – गोविन्द सिंह यादव 35
- जीत की रात – श्रीमती खुशजीत कौर 35
- जय जवान – जय किसान जीने का आरक्षण – अभिषेक कौशिक 36
- राष्ट्रीय एकता को प्रोत्साहित करने में हिन्दी का स्थान – एस. विजयलक्ष्मी 37
- संघ की राजभाषा नीति 38
- हिंदी के प्रयोग के लिए राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय) द्वारा जारी वर्ष 2016–17 का वार्षिक कार्यक्रम 40
- रिकॉर्ड उत्पादन तथा विस्तार संबंधी विवरण – डा0 विशाल चौधरी 42
- परमपूज्य महामानव डॉ बाबा साहब अंबेडकर की जीवन यात्रा – श्री एन. एम. वाघमारे 43
- सेवानिवृत्त / स्वेच्छा सेवानिवृत्त / त्याग पत्र प्राप्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सूची 44

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं की मौलिकता का पूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है । अतः पत्रिका में निहित रचनाओं के लिए एच.आई.एल प्रबंधन उत्तरदायी नहीं है ।

श्री अनन्त कुमार
ANANTH KUMAR
ಅನಂತ ಕುಮಾರ್

माननीय रसायन एवं उर्वरक मंत्री
भारत सरकार

**MINISTER FOR
CHEMICALS & FERTILIZERS
GOVERNMENT OF INDIA**

संदेश

यह बहुत ही प्रसन्नता का विषय है कि हिन्दुस्तान इन्सेक्टिसाइड्स लिमिटेड द्वारा गृह पत्रिका ''रक्षक''का प्रथम अंक प्रकाशित किया जा रहा है। हिन्दुस्तान इन्सेक्टिसाइड्स लिमिटेड की स्थापना वर्ष 1954 में भारत में लोक स्वास्थ्य के लिए डी.डी.टी. के निर्माण हेतु की गई थी। बाद में कंपनी अपने कारोबार में विविधता लाई तथा कंपनी ने फसल सुरक्षा के लिए विभिन्न पैस्टिसाइड्स का उत्पादन करना आरम्भ किया। इस समय एच.आई.एल. फसल सुरक्षा, लोक स्वास्थ्य तथा बीज उत्पादन तीन क्षेत्रों में कार्य करके भारत सरकार के खाद्यान्न सुरक्षा के अभियान में योगदान दे रही है तथा हाल ही में कंपनी ने उर्वरक विपणन का कार्य भी आरंभ किया है।

हमारा देश विविधताओं वाला देश है, जहां अनेक भाषाएं एवं बोलियां बोली जाती हैं। किंतु उन सभी भाषाओं एवं बोलियों में हिंदी ही एकमात्र भाषा है जो देश में सर्वाधिक बोली एवं समझी जाती है। राष्ट्रीय एकता की प्रतीक इस भाषा के महत्व तथा लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए आजादी के बाद हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी को संविधान में राजभाषा का दर्जा प्रदान किया था। आज विश्व भर के विकसित देशों की विकास गाथाएं हमारे समक्ष सार्थक विकास के प्रतिमान के रूप में मौजूद हैं, जिनसे स्पष्ट होता है कि कोई भी राष्ट्र अपनी भाषा को राजभाषा के रूप में प्रयोग कर विकास कर सकता है। हम भी राजभाषा हिंदी का प्रयोग करके विकास के लक्ष्यों को तेजी से प्राप्त कर सकते हैं। आज सूचना तकनीक के माध्यम से भी हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए अनुकूल वातावरण तैयार हो रहा है। अपना सरकारी काम–काज राजभाषा हिंदी में करना हमारा संवैधानिक दायित्व भी है। हमें अपने कामकाज में कठिन शब्दों का प्रयोग न करके सरल और सहज हिंदी का प्रयोग करना चाहिए।

मैं आशा करता हूं कि आप सभी अपने कार्यालयों में अधिकांश सरकारी कामकाज हिंदी में करेंगे और देश को विकास के पथ पर अग्रसर करने में भागीदार बनेंगे। हिन्दुस्तान इन्सेक्टिसाइड्स लिमिटेड हर क्षेत्र में अपना लक्ष्य प्राप्त करे, यही मेरी हार्दिक शुभकामना है।

(अनन्त कुमार)

श्री मनसुख मांडविया,
MANSUKH MANDAVIYA

माननीय राज्यमंत्री,
सड़क परिवहन एवं राजमार्ग,
जहाजरानी, रसायन एवं उर्वरक
भारत सरकार

**MINISTER OF STATE
ROAD TRANSPORT & HIGHWAYS,
SHIPPING, CHEMICALS & FERTILIZERS,
GOVERNMENT OF INDIA**

संदेश

हिंदी देश की राष्ट्रभाषा है, इसमें भावनात्मक लगाव है। राजभाषा राष्ट्र की संस्कृति का प्रतीक होती है। राजभाषा हिंदी के प्रयोग करने में अपनापन व आदर का भाव झलकता है। जो देश अपनी भाषा को अपनाता है वह अपने देश को तो शक्तिशाली बनाता ही है, साथ में उस देश के जनमानस को भी अपनी भाषा के ज्ञान के सागर में डुबकी लगाने का अवसर भी मिलता है।

मुझे यह जानकार प्रसन्नता हुई कि कंपनी के प्रबंधन तथा सभी कर्मचारियों ने राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने एवं हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य करने पर मंत्रालय से प्रथम पुरस्कार तथा नराकास उपक्रम (दिल्ली) से राजभाषा शील्ड भी प्राप्त की है।

हिन्दुस्तान इन्सेक्टिसाइड्स लिमिटेड की गृह पत्रिका **''रक्षक''** का प्रथम अंक के प्रकाशन एवं पत्रिका की सफलता के लिये मेरी हार्दिक शुभकामनायें।

(मनसुख मांडविया)

अनुज कुमार बिश्नोई
सचिव
ANUJ KUMAR BISHNOI
Secretary

भारत सरकार
रसायन और उर्वरक मंत्रालय
रसायन और पेट्रो रसायन विभाग
कक्ष संख्या 501, 'ए' विंग, शास्त्री भवन
डॉ राजेन्द्र प्रसाद रोड़, नई दिल्ली–110001
Government of India
Ministry of Chemicals & Fertilizers
Department of Chemicals & Petrochemicals
Room No. 501, 'A' Wing, Shastri Bhavan
Dr. Rajendra Prasad Road, New Delhi - 110001
Tel.: 23384196/23382467/Fax: 23387892
E-mail : sec.cpc@nic.in

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि हिन्दुस्तान इन्सेक्टिसाइड्स लिमिटेड द्वारा गृह पत्रिका "रक्षक" का प्रथम अंक प्रकाशित किया जा रहा है। यह आवश्यक है कि आम आदमी की भाषा का शासन की व्यवस्था में अधिक से अधिक प्रयोग हो। इस दिशा में इस अंक का प्रकाशित होना एक महत्वपूर्ण कदम है।

हिन्दुस्तान इन्सेक्टिसाइड्स लिमिटेड की भारत सरकार द्वारा घोषित राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अभियान की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका है। खाद्य सुरक्षा फसल संरक्षण के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है तथा एच.आई.एल. के गुणवत्तायुक्त उत्पादों का प्रयोग करके उत्पादनशीलता को बढ़ाया जा सकता है। यह प्रसन्नता का विषय है कि संगठन ने उर्वरक विपणन के क्षेत्र में भी कदम रखा है। हमें आशा है कि संगठन के इस प्रयास से देश की फसल उत्पादकता में वृद्धि होगी तथा साथ ही, सरकार की विभिन्न योजनाओं को आम जनता तक उनकी ही भाषा में पहुंचाने में राजभाषा हिंदी सार्थक सिद्ध होगी।

पत्रिका की सफलता के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(अनुज कुमार बिश्नोई)

समीर कुमार बिश्वास
संयुक्त सचिव
SAMIR KUMAR BISWAS, IAS
Joint Secretary

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
रसायन और उर्वरक मंत्रालय
रसायन और पेट्रो रसायन विभाग
कक्ष संख्या 501, 'ए' विंग, शास्त्री भवन
डॉ राजेन्द्र प्रसाद रोड़, नई दिल्ली–110001

Government of India
Ministry of Chemicals & Fertilizers
Department of Chemicals & Petrochemicals
Room No. 501, 'A' Wing, Shastri Bhavan
Dr. Rajendra Prasad Road, New Delhi - 110001

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई है कि हिन्दुस्तान इन्सेक्टिसाइड्स लिमिटेड द्वारा अपनी गृह पत्रिका ''रक्षक'' के प्रथम अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

एच.आई.एल. ने मार्च माह में अपनी स्थापना के 62 वर्ष पूरे किए हैं। इन 62 वर्षों में एच. आई. एल. के समक्ष जब भी कोई कठिन चुनौती उत्पन्न हुई, एच.आई.एल. के अधिकारियों/कर्मचारियों ने अपनी कुशाग्रता का परिचय देते हुए हर चुनौती का सामना किया। हम सभी जानते हैं कि अवसर और चुनौतियां किसी भी संगठन के विकास का मानदंड होती है। हम सब को चाहिए कि हम सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाएं, क्योंकि सकारात्मक दृष्टिकोण चुनौतियों का सामना करने में हमें शक्ति प्रदान करता है।

हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के प्रति भी हमें सकारात्मक दृष्टिकोण रखना चाहिए, यदि इच्छाशक्ति दृढ़ हो तो मंजिल दूर नहीं होती है। मुझे बहुत खुशी है कि कंपनी को राजभाषा हिंदी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए मंत्रालय एवं विभिन्न क्षेत्रीय नराकासों से पुरस्कार एवं ट्रॉफी प्राप्त हुई हैं। कंपनी के कार्मिकों को भी प्रतिवर्ष केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर एवं विभिन्न नराकासों द्वारा क्षेत्रीय स्तर पर आयोजित विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं में सतत पुरस्कार एवं शील्ड प्राप्त होती रहती हैं।

हिंदी हम समस्त भारतवासियों को एकजुट रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अतः हम सब का कर्तव्य बन जाता है कि हम पूरी लगन, सत्यनिष्ठा एवं समर्पण भावना से कार्य करते हुए हिन्दी कार्यान्वयन की प्रगति में अपना प्रयास करते रहें।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार में ''रक्षक'' अभूतपूर्व सफलता प्राप्त करे, यही मेरी हार्दिक कामना है।

समीर कुमार बिश्वास

(समीर कुमार बिश्वास)

एस. पी. मोहन्ती
अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक

S. P. MOHANTY
Chairman & Managing Director

हिन्दुस्तान इन्सेक्टिसाइड्स लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
स्कोप काम्पलैक्स, कोर – 6, द्वितीय तल, 7, लोदी रोड, नई दिल्ली–110003

HINDUSTAN INSECTICIDES LIMITED
(A GOVERNMENT OF INDIA ENTERPRISE)
SCOPE Complex, Core-6, 2nd Floor, 7 Lodhi Road, New Delhi - 11003
Phone : off: 24362044 Fax : 91-11-24362116, E-mail: hildrm@gmail.com
Website: www.hil.gov.in

अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक की कलम से

एच.आई.एल. की गृह पत्रिका 'रक्षक' का प्रथम अंक आपको सौंपते हुए मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। कार्यालय का कामकाज हिन्दी में करने तथा राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु कार्मिकों की हिन्दी के प्रति रुचि बढ़ाने में गृह पत्रिका की अहम् भूमिका होती है। इसके अतिरिक्त पत्रिका कार्यालय की विभिन्न गतिविधियों का आइना भी होती है, जिसके द्वारा हम अपनी उपलब्धियों को भी सभी तक पहुंचा सकेंगे।

हिन्दुस्तान इन्सेक्टिसाइड्स लिमिटेड एक मात्र भारत सरकार की संस्था है, जो लोक स्वास्थ्य और फसल संरक्षण के प्रयोजन हेतु गुणवत्तावान कीटनाशकों का उत्पादन करके उचित मूल्य पर किसानों को उपलब्ध कराने के साथ–साथ बीजों का उत्पादन एवं विपणन भी करती है। अभी हाल ही में कपंनी ने उर्वरक विपणन के क्षेत्र में भी कदम रखा है। इस प्रकार किसानों को सभी आवश्यक कृषि आदान एक ही स्थान पर उपलब्ध कराने में हम सफल होंगे।

कंपनी अपने व्यावसायिक हितों तथा निगमित सामाजिक दायित्वों का ध्यान रखने के साथ–साथ राजभाषा हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग बढ़ाने के लिए भी निरन्तर प्रयत्नशील है। कंपनी द्वारा माननीय संसदीय राजभाषा समिति, मंत्रालय तथा राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी सभी निर्देशों का पालन करने का पूरा प्रयास किया जाता है तथा इसी प्रयास को आगे बढ़ाते हुए छमाही गृह पत्रिका के प्रकाशन की शुरुआत की जा रही है।

मैं आशा करता हूं कि पत्रिका को पढ़ने के पश्चात् कार्मिकों को हिन्दी में अधिकाधिक कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी। इस दिशा में आप सभी के योगदान और सहयोग की भी मैं अपेक्षा करता हूं।

मुझे विश्वास है कि सभी अधिकारी एवं कर्मचारी पूरी लगन, परिश्रम, एकजुटता और पूर्ण समर्पण की भावना से संगठन को सफलता के शिखर पर पहुंचाने के लिए कार्य करेंगे, ताकि हम सभी क्षेत्रों में महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल करें। पत्रिका की सफलता के लिए मेरी ओर से आप सबको ढ़ेर सारी शुभकामनाएं।

एस. पी. मोहन्ती

(एस. पी. मोहन्ती)

संपादकीय

प्रिय पाठकगण,

14 सितंबर, 1949 को हिन्दी को संविधान में राजभाषा का दर्जा दिया गया था। संविधान में हिन्दी को राजभाषा का दर्जा देने के लिए तथ्य और सर्वेक्षण के आधार पर अहम भूमिका संविधान सभा के अहिन्दीभाषी सदस्यों ने निभाई थी। राजभाषा हिन्दी के जन्मदाताओं के नामों का उल्लेख करना भी उचित होगा उनमें से प्रमुख हैंः सर्वश्री के.एम. मुंशी, एन. गोपालास्वामी आयंगर, श्यामाप्रसाद मुखर्जी जो अहिन्दी भाषी होते हुए भी सरकारी कामकाज हिन्दी में करने के पक्षधर रहे।

परन्तु हिन्दी को राजभाषा का दर्जा मिलने के इतने वर्ष पश्चात् भी अधिकतर कार्यों में अनुवाद की वैशाखी के सहारे हिन्दी की स्थापना की जाती है, यह बात उसकी स्वाभाविकता को प्रभावित करती है। उसका अपनापन, उसकी अस्मिता सब पर असर पड़ता है। भाषा वही जीवित रहती है जो जनता द्वारा जीवन में प्रतिदिन प्रयोग की जाती है। उसके प्रयोग से उसका सतत विकास भी होता रहता है।

हिन्दी में कार्य करने सहित किसी भी कार्य के प्रति हमारा दृढ़ निश्चय, उसको करने के लिए अवश्यक ज्ञान, संसाधन और समय की जरूरत होती है। यदि हम सब यह पक्का इरादा कर लें कि हमें हिन्दी का प्रयोग करने में अपनी बेहतर भूमिका निभानी है तो हिन्दी को आगे बढ़ने से कोई रोक नहीं सकता।

एच.आई.एल. की गृह पत्रिका ''रक्षक'' का प्रथम अंक आपको सौंपते हुए मुझे अपार प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। हमें पत्रिका के प्रथम अंक के बारे आपके बहुमूल्य सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी, ताकि आगामी अंकों को आपके सुझावों से और भी बेहतर रूप दिया जा सके।

सादर,

शान्ति ध्रुव

(शान्ति ध्रुव)

आनन्द स्वरूप शर्मा
उ0 म0 प्रबन्धक (विपणन),
(कृषि रसायन, उर्वरक और जन स्वास्थ्य),
मुख्यालय, नई दिल्ली

हिन्दुस्तान इन्सेक्टिसाइड्स लिमिटेड की भारत की प्रगति में भागीदारी

हिन्दुस्तान इन्सेक्टिसाइड्स लिमिटेड, भारत सरकार के रसायन और उर्वरक मंत्रालय के रसायन और पेट्रो रसायन विभाग के प्रशासनिक नियंत्रण में 100% स्वामित्व वाला सार्वजनिक क्षेत्र का एक उद्यम है। एच.आई.एल. की स्थापना सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए भारत में डी.डी.टी. का निर्माण करने के लिए वर्ष 1954 में की गई थी। कंपनी ने अस्सी के दशक में कृषि रसायन क्षेत्र में विस्तार किया। कम्पनी अपने उद्देश्य को पूर्ण करते हुए लगातार 10 वर्षों से लाभ अर्जित कर रही है।

वर्तमान में कंपनी फसल सुरक्षा, लोक स्वास्थ्य एवं बीज उत्पादन एवं विपणन क्षेत्र में काम कर रही है। हाल ही में कंपनी ने उर्वरक विक्रय क्षेत्र में भी कदम रखा है। कंपनी की उद्योगमंडल (केरल), रसायनी (महाराष्ट्र) और बठिंडा (पंजाब) में तीन उत्पादन इकाइयां हैं। दिल्ली, अहमदाबाद, हैदराबाद, नागपुर, बैंगलोर, कोलकाता और कोयंबटूर में क्षेत्रीय बिक्री कार्यालयों के साथ कंपनी का देश भर में अपना विपणन नेटवर्क है। एच.आई.एल के डी.डी.टी, डाइकोफॉल, मोनोक्रोटोफॉस, ग्लाइफोसेट, इमिडाक्लोप्रिड, क्लोपाइरिफॉस, मैलाथियान, बुफ्रोफेजिन तकनीकी और 35 से अधिक कीटनाशकों का अपना फार्मुलेशन है। पौध संरक्षण प्रयोजनों के लिए और अधिक आवश्यक विभिन्न अन्य तकनीकी श्रेणी के कीटनाशक बनाने के लिए कम्पनी नये संयंत्र लगा रही है। एच.आई.एल. बीज एवं उर्वरक के संबंधित क्षेत्रों में भी और अधिक विस्तार हेतु योजनाओं पर कार्य कर रही है। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा कंपनी को बीज उत्पादन एवं विक्रय के लिए राष्ट्रीय स्तर की बीज संस्था का एक दर्जा दिया गया है, जिससे एच.आई.एल. कृषक समुदाय को आवश्यकतानुसार उच्च गुणवत्ता के बीज उत्पादन और आपूर्ति सुनिश्चित करने में सरकार की योजनाओं को सहायता प्रदान कर रही है। इसी प्रकार रसायन और उर्वरक मंत्रालय, उर्वरक विभाग द्वारा भी पोटास एवं फॉसफोरस के उर्वरकों के लिए आयात एजेंसी का दर्जा भी दिया गया है। यूरिया की आपूर्ति के लिए एच.आई.एल. ने पहले से ही सार्वजनिक उपक्रमों नेशनल फर्टिलाइज़र लिमिटेड और राष्ट्रीय कैमिकल एण्ड फर्टिलाइज़र लिमिटेड के साथ अनुबन्ध किया हुआ है। अन्य अग्रणी उर्वरक कंपनियों के साथ अनुबन्ध करना अभी क्रम में है। हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी के "भारत निर्माण" के सपनों को साकार करने के लिए एच.आई.एल. डी.डी.टी. का एक मात्र निर्माता होने के नाते विश्व एवं घरेलू आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु तथा कई दक्षिणी अफ्रीकी देशों को डी.डी.टी. निर्यात करने के लिए पहले से ही महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। कंपनी का लक्ष्य वर्तमान में लगभग 350 करोड़ रूपये के कारोबार से आगामी 5 वर्षों में 950 करोड़ रूपये से अधिक के कारोबार तक पहुंचने का है।

कम्पनी द्वारा लघु अवधि और दीर्घकालिक रणनीति पहले से ही तैयार कर ली गई हैं अर्थात सयंत्रों की क्षमता उपयोग को बढ़ाने के साथ विपणन विभाग द्वारा ब्रांड बिक्री पर और अधिक ध्यान देने के लिए अल्पावधि उपाय किए जायेंगे। कंपनी नई पीढ़ी के कीटनाशी बनाने के लिए बहुराष्ट्रीय कंपनी के साथ अनुबन्ध करने के अलावा उर्वरकों के आयात/विनिर्माण और विपणन के लिए गठबंधन करेगी। उत्पादों की वर्तमान सीमा श्रृंखला में जैव कीटनाशकों और जैव उर्वरकों को भी जोड़ा जाएगा।

लघु अवधि और मध्य अवधि रणनीति में डी.डी.टी. के विकल्प, जिन्हें घरेलू छिड़काव और लोक स्वास्थ्य क्षेत्र के लिए एल.एल.आई.एन को लाँच करने के लिए प्रयोग किया जा सकता है। कृषि रसायन के हमारे मौजूदा उत्पादों के साथ इन उत्पादों की मार्किटिंग करने के लिए जैव उर्वरक और जैव कीटनाशकों के निर्माण में उतरना एक तालमेल होगा। पूर्वी क्षेत्र के कृषक समुदाय की आवश्यकता को पूरा करने के लिए पूर्वी क्षेत्र में कृषि रसायन का फार्मूलेशन संयंत्र भी लगाना है, जिसके लिए कम्पनी प्रयासरत है। उद्योग की उभरती चुनौतियों का सामना करने के लिए अनुसंधान एवं विकास गतिविधियों को मज़बूत बनाने के लिए भी ध्यान दिया जा रहा है।

कंपनी की दूरदर्शिता पौध संरक्षण रसायन, बीज एवं उर्वरकों में एक अग्रणी प्रतिस्पर्धक बनना है जिससे भारत के कृषक समुदाय के लिए एक ही स्थान पर खेती समाधान उपलब्ध हो जाएगा। सार्वजनिक स्वास्थ्य क्षेत्र में एच.आई.एल. मलेरिया एवं अन्य जानलेवा बीमारियों को फैलाने वाले वेक्टर को नियंत्रण करने के लिए अपने गुणवत्तायुक्त कीटनाशकों के प्रयोग द्वारा वेक्टर जनित रोगों के नियंत्रण में एक अहम भूमिका निभाने के लिए वचनबद्ध हैं।

अनिल यादव,
उप महा प्रबन्धक (बीज विपणन),
मुख्यालय, नई दिल्ली

हिन्दुस्तान इन्सेक्टिसाइड्स लिमिटेड

बीज उत्पादन एवं विपणन के क्षेत्र में एक उभरती हुई संस्था

हिन्दुस्तान इन्सेक्टिसाइड्स लिमिटेड (एच.आई.एल.) ने गुणवत्ता कृषि रसायनों के निर्माण और आपूर्ति के अलावा पूरे भारत में किसानों को विभिन्न फसलों के गुणवत्तावान बीजों का उत्पादन एवं आपूर्ति करने का कारोबार भी शुरू कर दिया है। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा हिन्दुस्तान इन्सेक्टिसाइड्स लिमिटेड को राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन (NFSM), बागवानी के समन्वित विकास पर मिशन (एमआईडीएच), तिलहन और ऑयल पाम राष्ट्रीय मिशन (NMOOP) जैसी महत्वपूर्ण योजनाओं के तहत गुणवत्तावान बीज का उत्पादन एवं आपूर्ति करने के लिए अन्य राष्ट्रीय स्तर की एजेंसियों (NLA) जैसेः एन.एस.सी, कृभको, इफको आदि जैसे बीज उत्पादन एजेंसी के समकक्ष दर्जा प्राप्त है।

गुणवत्तावान बीज उत्पादन और वितरण के तहत प्रमुख फसलें

श्रेणी		**बीज उत्पादन के तहत प्रमुख फसल**
अनाज	:	चावल, मक्का, गेहूं, जौ
दलहन	:	चना, मूंग, उरद, सेम, मसूर, अरहर/मटर (दलहन)
तिलहन	:	मूंगफली, सोयाबीन, लाही और सरसों
सब्ज़ियां	:	भिंडी, फ्रेंच बीन, सब्ज़ी मटर, धनिया, मेथी, पालक, कद्दू इत्यादि
संकर बीज	:	मक्का और धान

गुणवत्तावान बीज उत्पादन और वितरणः— एच.आई.एल. द्वारा वर्तमान में, गुणवत्तावान अर्थात प्रजनक, आधारीय तथा प्रमाणित बीजों का उत्पादन किया जा रहा है। भारत के 10 प्रमुख राज्यों जैसे आन्ध्रप्रदेश, तेलंगाना, उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, कर्नाटक और उत्तराखंड में बीज उत्पादन किया जा रहा है। उत्तर–पूर्वी भारत में भी 7 पर्वतीय राज्यों में भारत सरकार के बीज मिनीकट कार्यक्रम के तहत विभिन्न फसलों के उन्नत किस्मों के बीजों की आपूर्ति की जा रही है। एच.आई.एल. मुख्य रूप से आई.सी.आर.आई.एस.ए.टी (ICRISAT), हैदराबाद और भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र, ट्राम्बे द्वारा विकसित नवीनतम मूंगफली किस्मों के प्रजनक बीजों के उत्पादन में भारतीय कृषि अनुसंधान के प्रयासों को भी सफलतापूर्वक पूरा कर रहा है। एच.आई.एल. ने विभिन्न राज्यों में गुणवत्तावान बीज उत्पादन एवं विपणन में पिछले तीन वर्षों के दौरान एक शानदार विकास किया है।

एच.आई.एल. बीज वितरण प्रणालीः— विभिन्न राज्यों के कृषि विभागों, राज्य बीज निगमों को आपूर्ति। विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत राज्य कृषि विभागों को जैसेः— राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन, बागवानी विकास मिशन के तहत राज्य के कृषि विभाग को आपूर्ति। भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के बीज मिनीकिट कार्यक्रम के तहत आपूर्ति। जिला स्तर पर निजी बीज वितरकों के माध्यम से किसानों को सीधे ही बीजों की आपूर्ति एवं वितरण। जिला स्तरों पर उर्वरकों के विक्रय केन्द्र तथा निजी बीज कंपनियों के माध्यम से प्रत्यक्ष आपूर्ति और विपणन।

तकनीकी सहयोगः— एच.आई.एल. भारत के विभिन्न राज्यों में अपने स्वयं के आधारीय और प्रमाणित बीजों के उत्पादन के लिए प्रजनक बीज के उत्पादन प्राप्त करने के विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों और भारतीय कृषि अनुसंधान के व्यापार योजना प्रभाग (बीपीडी) का सदस्य है। वर्तमान में, एच.आई.एल. द्वारा निम्नलिखित विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद से नवीनतम अधिक उपज देने वाली किस्मों के प्रजनक बीज प्राप्त करना प्रगति पर है।

क्र. सं.	संस्थान का नाम	प्रयोजन
1	मूंगफली अनुसंधान निदेशालय, आईसीएआर, जूनागढ़, गुजरात	भारत में विभिन्न राज्यों को वितरण के लिए मूंगफली की विकसित किस्मों और आईसीआरआईएसएटी और भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र के प्रजनक बीज प्राप्त करना और प्रजनन।
2	भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आईएआरआई), नई दिल्ली	फाउंडेशन बीज में सब्ज़ी और अन्य फसलों के प्रजनक बीज प्राप्त करना और प्रजनन।
3	जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय (जेएनकेवीवी), जबलपुर, मध्य प्रदेश	सोयाबीन, गेहूं और चना की फसलों के ब्रीडर बीज का संग्रह और प्रजनन।
4	विवेकानंद पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (VPKAS) अल्मोड़ा, उत्तराखंड	भारत के उत्तर पूर्वी पहाड़ी राज्यों के लिए संकर मक्का के खरीद और पैंरटल लाइन बीज की खरीद एवं प्रजनन।
5	भारतीय सब्ज़ी अनुसंधान संस्थान, (IIVR), वाराणसी, यू पी	सब्ज़ियों की फसलों की नवीनतम जारी किस्मों के प्रजनक बीज की खरीद एवं प्रजनन।
6	बागवानी अनुसंधान के भारतीय संस्थान, बंगलौर, कर्नाटक	सब्ज़ियों की फसलों की नवीनतम जारी किस्मों के प्रजनक बीज की खरीद एवं प्रजनन।

एच.आई.एल. का गुणवत्तावान बीज उत्पादन लक्ष्य: अगले दो–तीन वर्षों में दो से तीन लाख कुन्तल है।

कम्पनी के हैदराबाद स्थित क्षेत्रीय बिक्री कार्यालय के अन्तर्गत बीज उत्पादकों के साथ एच.आई.एल के अधिकारियों द्वारा की गई वार्ता के समय का चित्र

डॉ0 एस.के. मल्होत्रा, कृषि आयुक्त, भारत सरकार का गुरुग्राम स्थित अनुसंधान एवं विकास केन्द्र पर स्वागत करते हुए एच.आई.एल के अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक एवं अन्य अधिकारीगण

राजेन्द्र थापर
उप प्रबन्धक (विपणन),
मुख्यालय, नई दिल्ली

भारत में वेक्टर नियंत्रण के लिए डी.डी.टी का प्रयोग

मलेरिया, काला–जार, डेंगू, जापानी एन्सेफलाइटिस जैसे वेक्टर जनित रोग जन–स्वास्थ्य के लिए एक चिन्ता का विषय हैं और सामाजिक आर्थिक विकास में एक बड़ी बाधा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन और वेक्टर जनित रोग नियंत्रण कार्यक्रम, भारत सरकार के निदेशालय, एन.वी.बी.डी.सी.पी. मुख्य रूप से इन्डोर रेज़ीडुवल स्प्रे (आई.आर.एस) जैसे डी.डी.टी. और रसायन युक्त मच्छरदानी (एल.एल.आई.एन.एस) के प्रयोग को रोग वाहक पर नियंत्रण के लिए सिफ़ारिश करता है।

भारत में डी.डी.टी./मैलाथियॉन/सिन्थेटिक पाइरेथ्राइड जैसे कीटनाशकों के साथ इनडोर स्प्रे करना वेक्टर नियंत्रण कार्यक्रम का एक मुख्य मध्यवर्त रहता है। डी.डी.टी. एक ओरगेनोक्लोराइन रसायन है। भारत में वर्ष 1989 में कृषि क्षेत्र में इसके प्रयोग पर रोक लगा दी गई थी। परन्तु मलेरिया और कालाजार जैसे वेक्टर जनित रोगों के नियंत्रण के लिए इसका प्रयोग जारी रखा गया था। देश में जन स्वास्थ्य के महत्व के लिए वेक्टर नियंत्रण करने में डी.डी.टी. से आई.आर.एस का प्रयोग एक प्रमुख मध्यवर्त है।

लागत, अवशिष्ट प्रभावशीलता, सुरक्षा, वेक्टर अतिसंवेदनशीलता और अति सक्रिय–निष्क्रिय सहित छिड़काव करने के लिए एक कीटनाशक के चयन में कई कारक माने जाते हैं। देश में मलेरिया और कालाजार नियंत्रण के लिए एन.वी.बी.डी.सी.पी., भारत सरकार द्वारा डी.डी.टी. को कीटनाशक के रुप में निम्नलिखित कारणों से अनुशंसित किया गया है :–

- महामारी विज्ञान संबंधी प्रभाव
- वेक्टर संवेदनशीलता (मलेरिया और कालाजार वेक्टर दोनों के लिए)
- लागत प्रभावशीलता (कम परिचालन लागत)
- उपलब्धता
- लंबे समय तक प्रभावकारिता (छः माह से अधिक)

देश में मलेरिया की स्थितिः

देश की आबादी के लगभग 95% लोग मलेरिया प्रभावित क्षेत्र में रहते हैं और देश में 80% मलेरिया सूचित आंकडों में 20% जनसंख्या आदिवासी, पहाड़ी, कठिन और दुर्गम क्षेत्रों में रहती है। उड़ीसा, छत्तीसगढ़, झारखंड, मध्य प्रदेश, राजस्थान, आसाम, अरूणाचल प्रदेश और त्रिपुरा मुख्यतः मलेरिया प्रभावित क्षेत्र है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, देश में वर्ष 2001 में मलेरिया के 2.08 मिलियन मामले थे, जो कि वर्ष 2014 में घटकर 1.10 मिलियन रह गए। ये आंकडे देश में समग्र मलेरिया प्रभावी स्थानों पर मलेरिया की घटना इंगित करते हैं। जैसा कि मलेरिया रोगवाहक (वेक्टर) डी.डी.टी. के लिए अति संवेदनशील है। अतः देश के मलेरिया प्रभावित राज्यों को आई.आर.एस कार्यक्रम के लिए डी.डी.टी. की आपूर्ति की जाती है।

अन्य उपायों के साथ–साथ डी.डी.टी. के प्रभावी और कुशल प्रयोग ने वर्ष 1950 के दशक के मलेरिया के 75 मिलियन मामले वर्ष 2014 तक घटकर 1.1 मिलियन तक करने में योगदान दिया है और मौत के आंकड़ों को 41% तक कम किया है। एच.आई.एल ने देश के 22 राज्यों को वर्ष 2014–15 के दौरान 4213.85 मी.टन तथा वर्ष 2015–16 के दौरान 4103 मीट्रिक टन डी.डी.टी. 50: डब्ल्यू.डी.पी का उत्पादन एवं आपूर्ति की है।

देश में काला–जार की स्थिति

यह वेक्टर जनित रोग बालू मक्खी के द्वारा फैलता है तथा भारत के पूर्वी राज्यों बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश और पश्चिमी बंगाल में यह स्थानिक रोग है। देश में कुल 52 जिलों में यह स्थानिक रोग है। एक अनुमान के अनुसार, 4 राज्यों में लगभग 165.4 मिलियन आबादी खतरे में है। यह रोग मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली सामाजिक और आर्थिक रुप से कमजोर वर्ग की आबादी को प्रभावित करता है। काला–जार वेक्टर को नियंत्रण करने के लिए डी.डी.टी. का प्रयोग एक महत्वपूर्ण आई.आर.एस रसायन के रूप में अनुशंसित किया गया है। अन्य उपायों के प्रभावी कार्यान्वयन के अलावा डी.डी.टी. के साथ आई.आर.एस के माध्यम से वेक्टर नियंत्रण मैदान से 6 फीट की ऊंचाई तक प्रति वर्ष दो बार करने से काला–जार की घटनाओं में 76.38% तथा देश में कुल काला–जार से होने वाली मौतों में 85.20% की गिरावट हुई है।

मलेरिया और काला–जार के नियंत्रण के लिए डी.डी.टी. के वार्षिक प्रयोग की मात्रा केन्द्रीय स्वास्थ्य सचिव, भारत सरकार के तहत मैंडेट समूह समिति जिसमें अन्य सदस्य योजना आयोग, जैव प्रौद्योगिकी विभाग, कृषि और कोऑपरेशन विभाग, आई.सी.एम.आर. अनुसंधान संस्थान जैसे एन.

आई.एम.आर. और अन्य स्वास्थ्य कार्यालयों द्वारा निर्धारित की जाती है। डी.डी.टी. की वार्षिक मात्रा प्रत्येक राज्य, महामारी विज्ञान संबंधी आंकड़े और वेक्टर संवेदनशीलता आंकड़े डी.डी.टी. तथा अन्य कीटनाशकों की आवश्यकता के आधार पर एन.वी.बी.डी.सी.पी. निदेशालय द्वारा मेंडेट ग्रुप को प्रस्तावित की जाती हैं।

आज की तारीख में स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा अपने एकीकृत वेक्टर प्रबन्धन (आई.वी.एम) कार्यक्रम में डी.डी.टी. का प्रयोग जारी है, क्योंकि यह स्थिर, कम कीमत, अत्यधिक कुशल, अधिक समय तक अवशिष्ट कार्रवाई, ऑपरेटरों और डी.डी.टी. का छिड़काव किए गए घरों के निवासियों के लिए सुरक्षित है और इसके अलावा मलेरिया और काला–जार वेक्टर डी.डी.टी. से प्रभावित हैं।

राकेश मोहन थपलियाल
भूतपूर्व हिन्दी अधिकारी, रसायनी, महाराष्ट्र

शहादत

(कव्वाली)

सीमा पर मेरी जो शहादत न होती।
तो अपने वतन की, मां हिफाज़त न होती।।
तिंरगे मैं बहुत खुश हूं, तुझमें लिपट के।
इससे बड़ा न कोई सम्मान बढ़ के।।
मेरे घर जो जाओ, तो मेरी मां से कहना।
मां आंसू मत बहाना और मुझ पे नाज़ करना।।
तुझे क्या बताऊं, मां कठिन इम्तिहां था।
मुश्किलें बड़ी थी और फैसले की घड़ी थी।।
एक को चुनना था और वक्त बहुत कम था।
इधर तेरा घर था और उधर मां वतन था।।
कदम डगमगाते तो क्या मुंह दिखाता।
घर तो लौट आता पर बुज़दिल कहलाता।।
सर पे सामने मां, मौत आ खड़ी थी।
तेरे दूध की लाज रखनी पड़ी थी।।
गोलियों से सीना, जब चाक हो रहा था।
जय हिंद, जय भारत, मां मैंने बस कहा था।।
जवानों ने खुद की गर शहादत न दी होती।
तो घर में भी घर की फिर हिफाज़त न होती।।

रामदास गायधने
वरिष्ठ विश्लेषक
प्रयोगशाला रसायनी, महाराष्ट्र

बादल

ऐ आसमान में भटकने वाले बादल,
गरज–गरज कर बरस–बरस कर
कर दो गीला, धरती मां का आंचल।
कह दे मां से तड़फ–तड़फ कर,
ले लो मां मुझे आंचल में छुपा कर
तेरे ही कोख से पैदा हुआ ये बेटा
धन्य होगा तुम्हें पाकर।
हवा के झोकों से इधर–उधर
भ्रमण कर रहे ये बादल,
उधर देखें तो आदेश दे रहे हैं तुम्हें,
तुम्हारे तेजस्वी पिता।
जाओ जल्दी धो डालो,
धरती मां के चरण कमल,
धरती मां पुकार रही है तुम्हें
जल्दी छुप जाओ उसकी गोद में।
लपेट लो ऊपर से हरा भरा मां का आंचल
सो जाओ चैन से खुशी का गीत सुनकर,
ऐ इधर–उधर मंडराने वाले बादल,
धरती मां देख रही है तुम्हें,
कितनी होती है खुशी से पागल,
खिलती मुस्कान थिरक रही है चेहरे पे
प्रेम की नज़रों से देख रही है तुम्हें
बेटे को सीने से लगाने के लिए,
हर्ष से अपनी बाहें फैलाकर।

खुशी और गम

ज़िन्दगी में खुशी और गम दो किनारे हैं,
खुशी के प्याले तो सब पीते हैं,
ग़म के प्याले भी पीके देखो तो,
ज़िन्दगी का मज़ा कुछ और भी है।

आंखे रोती हैं कभी,
जब ग़म को सहा नहीं जाता
आंखे हंसते–हंसते रोती हैं कभी,
जब खुशी को रोक नहीं पाते।
थोड़ा ग़म को भूलकर, कुछ हंसके हंसाओ तो,
ज़िन्दगी का मज़ा कुछ और भी है।

कभी अपनो के लिये भी,
कभी दूसरों के लिये भी,
कुछ खुशी के लम्हे बांटे,
रोते हुये लोगों के आंसु पोंछे,
तो चेहरे पे खुशी की मुस्कान खिल जाती है।
ज़रा ग़म को पी के, खुशी के प्याले टकराकर तो देखो,
तो ज़िन्दगी का मज़ा कुछ और भी है।

ज़िन्दगी में ऐसे भी कभी आते हैं लोग,
जो खुद के लिये नहीं जीते।
मर जाते हैं लेकिन, कभी मिट नहीं सकते
जीते हैं वो जो दूसरों के लिये
खज़ाना खुशी का लुटाते–लुटाते,
हम भी थोड़ी सी ये खुशी बांटकर देखे तो,
ज़िन्दगी का मज़ा कुछ और भी है।

दुनिया में किसी का कुछ भरोसा नहीं,
आज जो है वह कल नहीं
क्यों ग़म में डूबकर रोयें,
रो–रोकर बरबाद हो जायें,
जो है अपने हाथों में,
खुशी के दो पल प्यार से यूं गले लगायें,
तो ज़िन्दगी का मज़ा कुछ और ही है।

अनिता वर्मा
सहायक प्रबंधक (हिन्दी)
बठिंडा यूनिट, पंजाब

हिन्दी: भारत का स्वाभिमान

सभ्यताओं का विकास मानव–जीवन की अत्यंत महत्वपूर्ण घटना रही है। चरणबद्ध तरीके से मनुष्य ने स्वयं को विकसित किया और पृथ्वी के सर्वशक्तिमान प्राणी के रूप में परचम लहराया। मनुष्य के एक सामाजिक प्राणी से बुद्धिजीवी बनने में भाषा, समझ एवं भावनाओं का अमूल्य योगदान रहा है। यह यात्रा किसी अद्भुत एवं विचित्र स्वप्न की तरह रही है। अलग–अलग भौगोलिक क्षेत्र एवं परिवेश के अनुकूल भाषा का हर बार नया रूप देखने को मिला। समय एवं मौसम बदलने के साथ–साथ भाषा में भी परिवर्तन एवं नवीनता और सौम्य मिश्रण के साथ नए आयाम स्थापित हुए।

इस सजीव ग्रह पर भारत एक ऐसा राष्ट्र है जहां पर भौगोलिक भिन्नताएं अपने भीतर भाषाओं और रीति–रिवाज़ों का खनिज समेटे हुए हैं। हिमालय की ऊँचाई पर खड़ी/पहाड़ी/डोगरी, सागर की गहराई और लहरों की तरह लहराती हुई तमिल, तेलगु और मलयाली, सघन वर्षा–स्थान में भीगी हुई मिठास लिए पूर्व की बंगाली, असमी, उड़िया, उसी प्रकार पश्चिमी रेगिस्तान की तरह कड़क और गर्माहट लिए राजस्थानी, हरियाणवी, मैदानी भारत की तरह समतल और सरल हिन्दी भी अपने आप में गौरवशाली इतिहास की साक्षी है। पंजाब की सौंधी खुशबु लिए पंजाबी/उर्दू की तहज़ीब भी अपने आप में सम्पन्न है।

इतनी विविधताएं और मिश्रण ही हमारे भारत की पहचान और शान है। भारत के बारे में प्रसिद्ध है:–

"कोस–कोस पर बदले भाषा, दो कोस पर पानी।"

भारत जैसे लोकतांत्रिक राष्ट्र में जहां 29 राज्य, 7 केन्द्र शासित प्रदेश और 130 करोड़ से अधिक जनसंख्या और अनगिनत जातियां और धर्म हैं, अखण्डता, एकता और प्रभुसत्ता का होना अत्यंत आवश्यक है और सभी को एक–सूत्र में बांधे रखने का कार्य करती है ——"हिन्दी"

भारत में कुछ राज्य जैसे:–पंजाब, बंगाल, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, ओड़िशा, तमिलनाडु, तेलंगाना, गोवा, केरल, असम, पूर्वोत्तर के 7 राज्य ऐसे क्षेत्र हैं जहां पर राज्य–भाषाओं को प्रथम दर्जा प्राप्त है, बाकी अधिकांश भारत में हिन्दी–भाषी लोग अथवा हिन्दी को समझने वाले भारतीय रहते हैं। यदि केवल दक्षिण भारत खासकर तमिलनाडु को छोड़ दिया जाए तो संपूर्ण भारत में हिन्दी एकमात्र भाषा है जिसे सभी समझते हैं। शहरी–ग्रामीण एवं अमीर–गरीब सभी वर्ग हिन्दी बोलने/समझने में सक्षम हैं। हिन्दी के बारे में कुछ गौरवशाली तथ्य इस प्रकार हैं :–

1. मैड्रियन, स्पैनिश एवं अंग्रेज़ी के बाद हिन्दी विश्व की सर्वाधिक प्रयोग की जाने वाली भाषा है।

2. एशिया के बाहर "फिजी" की राष्ट्रीय भाषा "हिन्दी" है।

3. 1881 में बिहार भारत का पहला ऐसा राज्य बना जिसने "हिन्दी" को प्रथम भाषा का दर्जा दिया।

4. 14 सितम्बर, 1949 को संविधान समिति ने हिन्दी को व्यावसायिक भाषा का दर्जा दिया। इसलिए 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

5. भारतीय संविधान के अनुसार अंग्रेज़ी/हिन्दी, दोनों ही भारत की सर्वोच्च भाषाएं हैं और हिन्दी के प्रचार/प्रसार पर सर्वाधिक ज़ोर दिया गया है।

हमारे संविधान के अनुच्छेद 343(1) के अनुसार – भारत की कार्य–भाषा हिन्दी होनी चाहिए और इसका आधार देवनागरी लिपि होनी चाहिए।

1965 में पारित प्रस्ताव के अनुसार हिन्दी भारत की एकमात्र वैध्य भाषा होनी चाहिए किन्तु दक्षिण भारत खासकर तमिलनाडु, महाराष्ट्र, आंध्र

हिंदी किसी एक प्रदेश की भाषा नहीं बल्कि देश में सर्वत्र बोली जाने वाली भाषा है। –विलियम केरी

प्रदेश और बंगाल के हस्तक्षेप के बाद यह निश्चित किया गया कि राज्य सरकारें अपनी स्वेच्छा से कोई भी मान्यता–प्राप्त भाषा का प्रयोग कर सकती हैं। अंग्रेज़ी को अनिश्चित काल के लिए कार्य– भाषा का दर्जा दे दिया गया।

"हिन्दी" स्वयं में सबसे सरल और जटिल भाषा है। सरल इसलिए क्योंकि सबसे अधिक बोली और समझी जाती है और जटिलता इसके व्याकरण और अशुद्धता के कारण उत्पन्न हुई है। प्राचीन हिन्दी संस्कृत भाषा का ही बदला स्वरूप है, किन्तु समय बीतने के साथ हिन्दी में उर्दू, अरबी, फारसी और लोक–भाषा का मिलन हुआ और आज हिन्दी का कोई निश्चित स्वरूप नहीं है।

इक्कीसवीं शताब्दी में विश्व में प्रतियोगिता और विकास की होड़ लगी है। तकनीकी सहयोग और कार्य में भाषा का महत्वपूर्ण स्थान है। हर विकसित राष्ट्र की एक मान्यता प्राप्त भाषा है जैसे चीनी, फ्रेंच, अरबी आदि। इससे प्रभुसत्ता की अनुभूति और गौरव भी मिलता है किन्तु भारत इस मामले में अपवाद है। अंग्रेज़ी को हम कार्य/संस्थानों के मुख्य–भाषा के रूप में प्रयोग करते हैं किन्तु अधिकांश आबादी हिन्दी समझती है। इसके परिणामस्वरूप न तो हम अंग्रेज़ी में निपुण है और हमारी प्राचीन संस्कृति और मूल्य जो हिन्दी में आसानी से समझ आते हैं, वे लुप्त होने के कगार पर है।

यह समय की मांग और एकता/विकास के सांमजस्य स्थापित करने का कारक है। इसी प्रचार के क्रम में सभी सरकारी संस्थानों में हिन्दी के अधिकांश प्रयोग पर बल दिया जा रहा है जो एक सराहनीय कदम है।

भारत का सौभाग्य है हमारे पास ज्ञान, कला और दक्षता है और सर्वोपरि "नैतिक मूल्य हैं", केवल एक आवश्यकता है मातृभाषा और राष्ट्र–गौरव की और यह केवल हिन्दी में निहित है। सभी को प्रयत्न करना चाहिए कि अपना आधार "हिन्दी" शैश्वकाल से ही सुदृढ़ करें और भारत को समृद्ध करें क्योंकि हिन्दी हमारी शान और भारत का "स्वाभिमान" है।

जय हिन्द

राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवश्यक है।

–महात्मा गांधी

साभार – राजभाषा विभाग,
गृह मंत्रालय

हिन्दी अनुवाद/टंकण में सहायक सॉफ्टवेयर/टूल्स

ऑनलाइन हिंदी शब्दकोश

अनुवाद के क्षेत्र से जुड़े लोग तथा सामान्य जन को भी किसी शब्द का अर्थ या दूसरी भाषा में पर्याय देखने के लिए शब्दकोश चाहिए होता है। ऐसे में अपने पास मोटे–मोटे शब्दकोश रखने की अब आवश्यकता नहीं है। अब हम विभिन्न प्रकार के अंग्रेज़ी–हिंदी शब्दकोश अपने कम्प्यूटर या मोबाइल पर ऑनलाइन/ऑफलाइन प्रयोग कर सकते हैं, जैसेः–

www.tdil-dc.in	→	पर शाब्दिका शब्द–कोश
www.dict.hinkhoj.com	→	पर हिन्खोज
www.cstt.nic.in	→	पर प्रशासनिक शब्दावली
htttp//e-mahashabdkosh.rb.aai.in	→	पर ई–महाशब्दकोश
www.shabdkosh.com	→	पर शब्दकोश

मशीनी हिंदी अनुवाद

हिंदी में कार्य करते समय कभी–कभी अनुवाद की आवश्यकता पड़ती है। अब सरल अंग्रेज़ी वाक्यों का हिंदी अनुवाद ऑनलाइन संभव है। यह सॉफ्टवेयर एक हिंदी अनुवादक की भांति कार्य करता है। परंतु इससे जटिल वाक्यों का अनुवाद सहज नहीं हो पाता। चूंकि भाषा व्यक्ति की भावना से जुड़ी होती है, इसलिए कोई भी सॉफ्टवेयर भावनाओं का अनुवाद नहीं कर सकता। यह अंग्रेज़ी वाक्य के शब्दों के हिंदी पर्यायों को वाक्य संरचना में बांधकर अनुवाद के रूप में प्रस्तुत कर देता है। अतः यह अनुवाद 100% शुद्ध नहीं होता। इसमें प्रायः संशोधन अपेक्षित होता है। इसके लिए निम्नलिखित साइट उपयोगी हैं:–

www.rajbhasha.gov.in	→	पर मंत्र राजभाषा
http://translate.google.co.in	→	पर गूगल ट्रांस्लेट
www.bing.com/translator	→	पर बिंग ट्रांस्लेशन
www.tdil-dc.in	→	पर मशीन ट्रांस्लेशन

गूगल वॉइस टाइपिंग

आप एक आसान तरीके से दस्तावेज़ में अपनी आवाज के साथ टाइप कर सकते हैं। फिलहाल, यह सुविधा क्रोम ब्राउज़र में ही उपलब्ध है।

1. सबसे पहले यह सुनिश्चित करें की आपके कंप्यूटर से एक माइक्रोफोन जुड़ा हुआ है और वह काम करता है तथा एक जी–मेल का यूजर आई–डी पासवर्ड होना जरूरी है।
2. Chrome ब्राउज़र में http://google.com में खोलें।
3. गूगल एप्स पर क्लिक करके More में से गूगल डॉक्स एप्प पर क्लिक करके जी–मेल आईडी से लोगिन करें।

4. गूगल डॉक्स में एक नया दस्तावेज़ खोलें।
5. उपकरण (Tools) मेनू > वॉइस टाइपिंग (Voice Typing) पर क्लिक करें। पॉप–अप माइक्रोफोन बॉक्स से भाषा (हिंदी) का चयन करें।
6. आप पाठ में बोलने के लिए तैयार हैं, तो माइक्रोफोन बॉक्स पर क्लिक करें।
7. सामान्य गति और वोल्यूम से स्पष्ट रूप से अपना पाठ बोलें।
8. रोकने के लिए माइक्रोफोन पर पुनःक्लिक करें।

वॉइस टाइपिंग की गलतियों में सुधार

आवाज़ के साथ टाइप करते हुए अगर गलती हो जाए तो गलती पर कर्सर ले जाकर और माइक्रोफोन से पुनः बोल कर ठीक कर सकते हैं। गलती सुधारने के बाद, आप आवाज टाइपिंग जारी रखना चाहते हैं, वहां कर्सर वापस ले जाएं।

मोबाइल फोन पर गूगल वाइस टाइपिंग के लिए

1. Play Store में जाकर Google Indic Keyboard डाउनलोड करके इंस्टाल करें।
2. Setting>> LanguageAnd Input में जाकर Keyboard & Input Method में से Google Indic Keyboard को टिक करें तथा Default में भी Google Indic Keyboard को चुनें, इसके अतिरिक्त गूगल वाइस टाइपिंग विकल्प को भी टिक करें।
3. जिस भी एप्लीकेशन में टाइप करना हो, टाइप करने के लिए क्लिक करने पर की–बोर्ड उपलब्ध होगा। की–बोर्ड के ऊपरी दाएं हिस्से पर उपलब्ध माइक्रोफोन बटन क्लिक करें।
4. Setting Option में जाकर हिंदी भाषा का चयन करें।
5. अब आपका फोन वाइस टाइपिंग के लिए तैयार है। उपरोक्त प्रक्रिया केवल एक बार ही करने की आवश्यकता होगी।
6. जब भी टाइप करना हो की–बोर्ड पर उपलब्ध माइक्रोफोन के बटन पर क्लिक करें और सामान्य गति और वोल्यूम से स्पष्ट रूप से अपना पाठ बोलें, इससे आप SMS, WhatsApp, E-mail, Google Docs आदि पर वाइस टाइपिंग कर सकेंगे।

Android Phone में Google Docs पर कार्य करना

Play Store से Google Docs डाउनलोड करके इंस्टाल करें। मोबाइल फोन में Google Docs पर कार्य तथा कंप्यूटर में एक ही गूगल Account होने पर Google Docs में फाइलें एक समान ही रहेंगी। फाइलों पर कार्य आप मोबाइल तथा कंप्यूटर पर आसानी से कर सकेंगे।

संकलनः श्री गायकर राजिव पांडुरंग,
वरिष्ठ सहायक, रसायनी, महाराष्ट्र

हम भारत के वासी

हम भारत के वासी
हरियाली में सुख देखने वाले
अकाल में दुःख झेलने वाले
बाढ़ में आंसू बहाने वाले
हम भारत के वासी।।

कितनी भी आपदाएं आएं
कभी हिचकिचाते नहीं हम
ज़िंदगी की रफ़्तार को
और तेज़ी से बढ़ाने वाले
हम भारत के वासी।।

समय आया तो मर मिटने वाले
पर किसी के सामने न झुकने वाले
अपनी अस्मिता को कायम रखने वाले
हम भारत के वासी।।

जग में श्रेष्ठ हमारी संस्कृति
इसका जतन शान से करने वाले
इसके ख़ातिर जां लुटाने वाले
हम भारत के वासी।।

कहते हैं सबसे महान है हमारा देश
इसकी महानता बरकरार रखने वाले
तन–मन से इसका विकास करने वाले
हम भारत के वासी।

सुविचार

- मां बाप का दिल जीत लो। कामयाब हो जाओगे। वरना सारी दुनिया जीत कर भी हार जाओगे।
- पहुंचने के लिए चलना पड़ता है और जो चल पड़ा समझो पहुंच गया।
- किसी का दिल दुखाने से पहले सौ बार सोच लो कि तुम्हारा भी दिल है उसे भी कोई दुखा सकता है।
- तुम्हरा विवेक ही तुम्हरा गुरू है।
- जो दूसरों को जानता है, वह विद्वान है। जो स्वयं को जानता है वह बुद्धिमान है।
- आप अपने कर्तव्यों का पालन करें, अधिकार स्वयं आ जाएगा।
- समय – सत्ता – संपत्ति और शरीर चाहे साथ दें या न दें, लेकिन स्वभाव, समझदारी और सच्चे संबंध हमेशा साथ देते हैं।
- यदि कोई आप पर हंस रहा है तो गुस्सा मत कीजिए, आप किसी को हंसने का सुख तो दे रहे हैं।
- सपने वह सच नहीं होते जो सोते वक्त देखे जातें हैं, सपने वह सच होते हैं जिनके लिए आप सोना छोड़ देते हैं।
- हमेशा अपनी छोटी–छोटी गलतियों से बचने की कोशिश करो, इंसान पहाड़ों से नहीं छोटे पत्थरों से ठोकर खाता है।

श्रीमती कंचन सिंह
पत्नी
श्री पी.सी. सिंह
उ0 म0 प्र0 (मा.संसा. एवं प्रशा.)
रसायनी, महाराष्ट्र

सिमटते परिवार

सिमटते जा रहे हैं सब परिवार,
अपनी ही दुनिया में रहते हैं ये परिवार।
मम्मी पापा और उनके एक या दो बच्चे
बस इतने ही लोग लगते हैं इनको अच्छे।
अब तो बहुत कम घरों में दिखती हैं दादी और नानी,
तो बच्चे अब भला किससे सुने कहानी।
दो दिन के लिए आया हुआ मेहमान हो जाता है भारी,
क्योंकि उनके लिए करनी पड़ती है अलग से तैयारी।
पहले छुट्टियों में आती थीं मौसी, बुआ और ताई,
घरों में खुब बनती थी मढरी और मिठाई।
अब छुट्टियां पहाड़ों पर मनती हैं,
मौसी, बुआ और चाची सब ऑनलाइन मिलतीं हैं।
आज हम बच्चों को अपने जमाने की बातें बताते हैं,
तो वे आंखे फाड़े आश्चर्य चकित हो जाते हैं।
आज के बच्चों के साथी है टी.वी और कम्प्यूटर,
नई पीढ़ी की बस इसी ओर है डगर।
जिस संयुक्त परिवार के लिए हमारा देश था मशहूर,
उसी से हम सब होते जा रहे हैं दूर।
हमें ही करना होगा इसे सुधारने का प्रयास,
सभी रिश्ते आस–पास हों तो परिवार
बनता है खास।

संकलकः श्री एन.एम.वाघमारे
हिन्दी सहायक (रसायनी यूनिट)

भगवान बुद्ध की अमर - वाणी

मनुष्यों

तुम सिंह के सामने जाते समय भयभीत न होना,
वह पराक्रम की परीक्षा है।

तुम तलवार के नीचे सर झुकाने से भयभीत न होना,
वह बलिदान की कसौटी है।

तुम पर्वत शिखर से पाताल में कूद पड़ना,
वह तप की साधना है।

तुम बढ़ती हुई ज्वालाओं से विचलित न होना,
वह स्वर्ण परीक्षा है।

पर शराब से सदा भयभीत रहना,
क्योंकि वह पाप और अनाचार की जननी है।

श्रीमती प्रतिभा रामचंद्र पाटील
सहायक,
रसायनी, महाराष्ट्र

हाज़िर हूं मी लार्ड

यह प्रसंग मेरे जीवन से जुड़ी, एक सत्य घटना है। लगभग 26–27 वर्ष पहले की बात है, हमने पाई–पाई जोड़कर एक घर खरीदा था और उसे लेकर ढेर सारे सपने भी संजोए थे। लेकिन विधाता को शायद यह मंजूर नहीं था, और उसके 03 साल बाद ही मेरे पति का एक दुर्घटना में देहान्त हो गया। वह मेरे जीवन का सबसे मुश्किल दौर था। 03 साल की बेटी और 07 साल के लड़के और बूजर्ग सास–ससुर की जिम्मेदारी का बोझ उठाने के दायित्व के बोझ के साथ, दुखों के पहाड़ के नीचे दबकर मैं बुरी तरह टूट चुकी थी। चारों ओर सिर्फ अंधेरा ही अंधेरा था, दूर–दूर तक उम्मीद की कोई किरण नज़र नहीं आती थी। ऊपर से नई मुसीबत यह थी कि भवन निर्माता ने भी घर का काम रोक दिया था। जबकि हम उसे अधिकांश पैसा दे चुके थे लेकिन काम काफी बाकी था। सोसायटी के हम सभी सदस्यों ने ग्राहक–मंच में शिकायत करने का निर्णय लिया व तद्नुसार कार्रवाई की। एक दिन हमें न्यायालय से पत्र मिला व अलीब़ाग बुलाया गया। हम निर्धारित तिथि पर न्यायालय में उपस्थित हुए लेकिन बिल्डर नहीं आया। न्यायाधीश महोदय बहुत नाराज़ हुए। जज साहब ने हमें सुझाव दिया कि अपना शेष कार्य स्वयं कर लो और बिल्डर को बाकी पैसा मत दो। सभी लोग सहमत भी हो गए पर मुझे चिंता सताने लगी। मैंने जज साहब से पूछा, कि क्या मैं कुछ निवेदन कर सकती हूं ? मैंने कहा, मान्यवर मेरा 70–80 हजार रुपये से अधिक का कार्य शेष है, जबकि बिल्डर का मेरे ऊपर केवल 15 हजार रु/– ही बकाया है। क्या वह मेरा शेष पैसा वापस लौटायेगा। जज साहब ने अन्य लोगों से पूछा, क्या आपकी भी ऐसी ही स्थिति है ? सभी ने उत्तर दिया ''जी लगभग ऐसा ही है''। पर आप सब तो कब से केवल सर हिला रहे थे। जज साहब ने कहा कि जो व्यक्ति अदालत में उपस्थित नहीं रहता है, वह आपका पैसा क्या लौटायेगा। जज साहब ने बिल्डर को 03 वर्ष के कारावास और 1 लाख रूपये के जुर्माने की सज़ा सुना दी। अदालत का फैसला लेकर जैसे ही हम कोर्ट से बाहर निकले, सबके चेहरे खिले हुए थे और मुझे बधाई देने वालों का तांता लग गया। सबने कहा, मैडम आपने हमें बचा लिया। मैंने कहा, जो सच था, मैंने वही अदालत को बताया है। 02 दिन के बाद भवन निर्माता का भाई, हमारे पास आया। उसने कहा,मैडम मेहरबानी करके, मेरे भाई को जेल से छुड़ा दीजिए। मैं वायदा करता हूं और स्वयं इस बात की जिम्मेदारी लेता हूं कि आपको 01 माह में आपके घर का कब्ज़ा मिल जाएगा, पर पहले आपको मेरे भाई को छुड़ाना होगा। हम सब मिलकर दुबारा अलीबाग कोर्ट गए, हमने जज साहब से मिलकर, भवन निर्माता के भाई द्वारा किए जा रहे वायदे के बारे में बताया। उसके बाद आवश्यक कानूनी कार्रवाई की औपचारिकताएं पूरी करने के बाद जज साहब ने भवन निर्माता को जेल से रिहा कर दिया और हमें भी 01 महीने के अंदर घर का कब्ज़ा मिल गया। इस घटना से हमें लगा कि कानून अपना काम करता है और आम आदमी को भी न्याय सुलभ है। आज मेरा परिवार एक सामान्य मध्यमवर्गीय परिवार की ज़िन्दगी जी रहा है, मेरा बेटा एक अभियंता और बेटी भी एम.बी.ए. है और दोनों अपनी शादीशुदा ज़िन्दगी में खुश हैं। बस यदि जीवन में कहीं कोई कमी अखरती है तो मुझे अपने पति के न होने और बच्चों को उनके पिता की।

विजय कुमार गाँधी
वरिष्ठ निजी सचिव,
मुख्यालय, नई दिल्ली

बेटी

सज़ा नहीं एक सपना होती है बेटी,
गैरों के बीच, अपनी होती है बेटी,
रंगों से सजाती है आंगन – घरों के,
आंगन की कल्पना होती है बेटी,
दान नहीं वरदान होती है बेटी,
आस्था और अरमान होती है बेटी
सुख की सुबह हो या ग़म की शाम,
बिन कहे हर पल साथ होती है बेटी
हक होते हुए भी, हक की बात करती नहीं,
आंखों की पलकों पे सजाती है जीवन
कभी मां तो कभी बहन होती है बेटी,
वजूद उसका कभी मिट नहीं सकता,
भार नहीं, जीवन का सार होती है बेटी।

हिंदी से कर ले प्यार

भाषा अपनी, अपना भारत, अपना गर्व महसूस करें।
कामकाज में उपयोग सहित, इस को आगे लाकर ठहरें।।

संविधान में स्वीकार किया है, व्यापक इस का विस्तार।
आओ मिलकर हम सब यारों, हिंदी से कर लें प्यार।।

हिंदी समृद्धि की वाहक है, इसको विदेशियों ने माना।
बिन हिंदी व्यापार है मुश्किल, ये उन लोगों ने जाना।।

जब तक न मजबूरी हो, हम राजभाषा में ही काम करें।
भाव चाहिये लेखन में बस, हिंदी लिखने से नहीं डरें।।

अंग्रेज़ गये आज़ाद हुए हम, पर भाषा उनकी है प्यारी।
क्या नहीं लगता ऐसा कि, नैतिकता इस कर्म से हारी।।

सरकार सदा सहयोग कर रही, मिलता है सदा ही ज्ञान।
निश्चय कर लें मिलकर, हिंदी में काम पर देंगे हम ध्यान।।

हार्दिक बधाई

- एच.आई.एल. के प्रधान कार्यालय के वरिष्ठ सहायक (विशेष श्रेणी) श्री अनिल सूद की बेटी **कुमारी स्वाति सूद** ने इस वर्ष सी.ए. की परीक्षा पास की तथा इस समय वह चार्टर्ड एकांउट के पद पर तैनात है। इस उपलब्धि के लिए आपको बहुत–बहुत बधाई।

- **श्री संजय के. ओसवाल**, रसायनी यूनिट – आपको केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद द्वारा अखिल स्तर पर आयोजित हिन्दी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता में तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ तथा नराकास (नवी मुंबई) द्वारा आयोजित आशु भाषण प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। आपका हिन्दी के प्रति उत्साह एवं रुचि प्रशंसनीय है। आपका हार्दिक अभिनन्दन।

- **श्रीमती राजेश्वरी एम ए**, निजी सचिव, महा प्रबन्धक, उद्योगमंडल यूनिट – आपको केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित हिन्दी निबन्ध एवं टंकण प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। आपकी हिन्दी के प्रति लगन एवं रुचि प्रशंसनीय है। आपका हार्दिक अभिनन्दन।

- **श्री जयेंद्र वसंत करडे**, कंपनी की रसायनी इकाई में केमिकल प्लांट ऑपरेटर के पद पर कार्यरत है। दैनिक कार्य के अलावा इनकी खेलों के प्रति रूचि जिसमें विशेषकर टेबल टेनिस है जिसमें इन्होंने अनेक उपलब्धियां और पुरस्कार से सम्मानित होकर हमारी कंपनी और हमारे देश को गौरव प्रदान किया।

  - वर्ष 1997, 2002 में औरंगाबाद में राज्य स्तरीय तथा वर्ष 2003 में राष्ट्रीय टेबल टेनिस स्पर्धा में प्रशिक्षक एवं खिलाड़ी की हैसियत से भाग लिया।
  - वर्ष 2015 में उत्पादन में वृद्धि, पैकिंग में सुधार तथा खेल–जगत की उपलब्धियों के लिए महाप्रबंधक महोदय से प्रशंसा–पत्र प्राप्त किया।
  - वर्ष 2007 में महाबलेश्वर में संपन्न 69वीं राज्य–स्तरीय टेबल टेनिस स्पर्धा में प्रशिक्षक व खिलाड़ी की हैसियत से भाग लिया।
  - वर्ष 2010 में इनर–मंगोलिया (चीन) में 15 वीं जागतिक वेटरन्स टेबल टेनिस स्पर्धा में खिलाड़ी के रूप में भारत का प्रतिनिधित्व किया।
  - वर्ष 2011 में मालवण (सिंधदुर्ग) में संपन्न महाराष्ट्र राज्य कोंकण विभागीय टेबल टेनिस स्पर्धा, का टुर्नामिंट–डायरेक्टर रहा।
  - वर्ष 2014 में ऑकलैंड (न्यूजीलैंड) में 17वीं जागतिक वेटरन्स टेबल टेनिस स्पर्धा में खिलाड़ी के रूप में भारत का प्रतिनिधित्व किया।
  - वर्ष 2007 में, पनवेल में आयोजित, महात्मा हंसराज अखिल भारतीय टेबल टेनिस स्पर्धा में असिस्टेंट चीफरैफरी।
  - महात्मा हंसराज जोनल टेबल टेनिस स्पर्धा, पनवेल का वर्ष 2014 में चीफ रैफरी।
  - महाराष्ट्र शासन द्वारा वर्ष 2014 के अगस्त माह से विशेष कार्यकारी अधिकारी (अलाभकारी) की पद पर नियुक्त।

उपरोक्त उपलब्धियों के अतिरक्त आपके पास खेल जगत की अनेक उपलब्धियाँ हैं, अनन्त मेहनत और लगन के बलबूते पर आपको भारतरत्न सचिन तेदुंलकर जैसे महान क्रिकेटर के साथ भी टेबल टेनिस खेलने का अवसर मिला। आपका हार्दिक अभिनन्दन।

हिन्दी राष्ट्रीय एकता की कड़ी है। -डा0 जाकिर हुसैन

नेत्रपाल सिंह
प्रयोगशाला परिचर,
मुख्यालय, नई दिल्ली

गणेश गुणवान

हे गणनायक
विश्व विनायक

हम सबको बुद्धि दो,
तन की शुद्धि दो।

हे लम्बोदर बल दो,
मन को निर्मल कर दो।

हे शिव पुत्र गणेश,
सबके हरो क्लेश।

तभी सभी स्वस्थ रहेंगे,
आबाद रहेंगे।

हम सब आपका वन्दन करते हैं।
झुका के सिर अभिनंदन करते हैं।

सब पर अपनी कृपा रखना,
न आये मन में किसी का बुरा सपना।।

आंखों को स्वस्थ रखने के उपाय

1. प्रातः काल बिस्तर त्याग कर आंखों को शीतल जल से धोयें।
2. पढ़ते – लिखते समय उपयुक्त प्रकाश पीछे से या बायीं तरफ से आना चाहिए सामने से आने पर आंखों को हानि होती है।
3. हरी पत्तियों वाली सब्जी तथा फल, दूध, अंकुरित अन्न का प्रयोग करें।
4. जब गाजर का सीज़न होता है तो उसका भरपूर सेवन करें, क्योंकि गाजर में कैरोटिन पाया जाता है जो नेत्र ज्योति को बढ़ाता है।
5. स्नान से पूर्व प्रतिदिन पैरों के अंगूठों में सरसों का तेल लगाने से नेत्र ज्योति विकसित होती है।
6. तलवों पर मालकांगनी के तेल की मालिश करने से भी नेत्र ज्योति का विकास होता है।
7. दारू–हल्दी (जड़ी–बूटी) को पानी में घिस कर पलकों पर लेप करने से आंखों की पीड़ा तुरंत शांत हो जाती है।
8. अश्वगंधा + मुलैठी के चार–चार ग्राम चूर्ण को इसमें आठ ग्राम आंवले का रस मिलाकर दूध या जल के साथ सेवन करने से नेत्र ज्योति बढ़ती है।
9. श्वेत 'पुनरनवा' की जड़ को पानी में घिसकर आंखों में अंजन करने पर 'चक्षु' ज्योति बढ़ती है।
10. शुद्ध शहद को आंखों में लगाने से शुरूआती मोतियाबिंदु कट जाता है तथा आंखों की ज्योति भी बढ़ती है।

समझौता ज्ञापन

श्री समीर कुमार बिश्वास (आई.ए.एस.), अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक, एच.आई.एल. साथ में श्री एस.पी. मोहन्ती, निदेशक (विपणन), एच.आई.एल और श्री मनोज मिश्रा, अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक, एन.एफ.एल समझौता ज्ञापन का आदान–प्रदान करते हुए।

श्री समीर कुमार बिश्वास (आई.ए.एस.), अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक के साथ में श्री एस.पी. मोहन्ती, निदेशक (विपणन), एच.आई.एल. और श्री आर.जी. राजन, अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक, आर.सी.एफ समझौता ज्ञापन का आदान–प्रदान करते हुए।

समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने के अवसर पर अधिकारीगण

रसायन और उर्वरक मंत्रालय, रसायन और पेट्रो रसायन विभाग के सचिव श्री अनुज कुमार बिश्नोई और हिन्दुस्तान इन्सेक्टिसाइड्स लिमिटेड के अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक श्री एस.पी. मोहन्ती द्वारा श्री समीर कुमार बिश्वास, संयुक्त सचिव, रसायन और पेट्रो रसायन विभाग की उपस्थिति में वर्ष 2016–17 का समझौता ज्ञापन हस्ताक्षर किया।

सभी महिलाओं को समर्पित

मैंने अपनी एक महिला मित्र से पूछा – आप वर्किंग वुमेन हो या हाऊस वाईफ ?
तो महिला मित्र ने दिल को छूने वाला जवाब दिया :–
''मैं फुल टाईम वर्किंग वुमेन हूं,
सुबह मैं अलार्म की क्लॉक हूं, मैं घर की कुक सर्वेंट और वेटर हूं,
मैं बच्चों की टीचर हूं, मैं बुजुर्गों की नर्स हूं, मैं घर की सिक्यूरिटी हूं,
मैं मेहमानों की रिसेप्शनिस्ट हूं, मैं फंक्शन में सज–धज के जाने वाली मॉडल हूं,
मैं अपने पति की हीरोईन हूं, मेरा कोई हॉलिडे नहीं होता,
मैं कोई वेतन भत्ता नहीं लेती।
इसके बावजूद भी मुझसे पूछा जाता है,
सारा दिन क्या किया ? ''

श्री सी. वी. राषीद
प्रबंधक (परियोजना),
उद्योग मंडल यूनिट, केरल

यहाँ कूड़ा–कचडा फेंक देना दंडनीय

आँखें खोलने पर कमरे के चारों ओर प्रकाश भरा था। कारपोर्च के ट्यूब लाइट के प्रकाश सोचकर खिड़की का कर्टन खींचकर देखा। यह तो ऐसा नहीं, सूरज निकलने से अधिक समय हो गया है। और कुछ सोचने को समय नहीं, जल्दी ही जाने को तैयार होना है। कंपनी में सवेरे 8 बजे पंच करना है।

पहले ही शरीर की सफाई करने की आवश्यकता है, नहीं तो अच्छा नहीं। इसलिए समय निकालकर आधे घंटे में तैयार हो गया।

इसके बाद मन शुद्धि को ध्यान में रखकर रोज़ की तरह ईश्वर वन्दना की। वर्दी न पहनने पर तकलीफ हो जाएगा। पिछले दिन ही इसकी तैयारी की गई थी, इसलिए जल्दी ही किया। इन सबके लिए आधा घंटा लगा।

तब तक समय 7.30 हो गया है; समाचार पढ़ने का समय नहीं। पत्नी को पुकारा कि 'हेय' , उसे ऐसे ही पुकारता हूँ। नाश्ता कंपनी से खाऊँगा, नहीं तो 8 बजे पंच करने में असमर्थ हूँगा।

इतने कहने से पत्नी के चेहरे पर हताश की छाया देखा। 'पुट्ट और कटला'' समय से उठकर बनायी थी। उसने गुनगुनाया।

'मलयालम लोगों का इष्ट भोजन है 'पुट्ट और कटला' जो खाना बहुत स्वादिष्ट है।

उसको खुश करने के लिए बोला कि "शाम को वापस आकर ज़रूर खाउँगा।"

उसकी सहमति से जाने के लिए बाहर आया। बाइक को स्टार्ट किया। तब देखा कि पत्नी एक प्लास्टिक की थैली को पकडकर, रुकिए बोलकर, दौड़ती आती है।

उसने थैली दिया , गुस्से को नियंत्रित करके पूछ लिया कि यह क्या है ?

आज तो देरी से जागने के कारण कूड़ा–कचड़ा डाल न पायी। कूड़ा–कचड़ा लेने वाला गया।

दरअसल गुस्सा आया, कुछ गालियां देने को मन लगा, फिर भी संभालकर बोला कि कोई बात नहीं, कहीं छोड़ देगा।

उसी थैली, एक नन्हे बच्चे को पकड़ने में नीचे गिरने से रोकने हेतु किसी प्रकार ध्यान से पकड़ेगा, उसी प्रकार पकड़ लिया। उसके चेहरे से समझ पाया कि घर में जो मैली सामग्रियाँ है वे सब बाहर हो जाएंगी।

बाइक के हैन्डलों में उस थैली को ध्यान से टांग दिया और किसी को भी उसे पहचानने में सफलता न पाने का ध्यान दिया। देखने वाला सोचेगा कि यह तो वर्किंग ड्रेस या रेन कोट होगा।

घर से बाहर निकलकर कूड़ा–कचड़ा छोडने के स्थान तक जाने पर एक बोर्ड देखा कि "यहाँ कूड़ा–कचड़ा डालना मना है"। "अब क्या करूँ" मन में प्रश्न आया। अगले स्थान के बारे में याद आ गया, जहाँ कूड़ा–कचड़ा फेंक उस स्थान को उसी के लिए बना दिया है और कूड़ा–कचड़े के ढेर देख पाते है। लेकिन यहाँ से एक किलोमीटर की दूरी है। वहाँ ले जाएगा। लेकिन उस स्थान को देखने से चकित हो गया। क्योंकि उस स्थान को बहुत साफ–सुथरा बनाकर वहाँ भी बोर्ड रखा है – " यहाँ कूड़ा–कचड़ा फेंकना दण्डनीय है।" "अब क्या करूँ ... .?" समय पर कंपनी पहुँचना तकलीफ है। देरी हो रही है। मन में ऐसा विचार आ गया कि हमारे लोगों को यह क्या हुआ है, सभी स्थान साफ–सुथरा बना दिया है। सड़क व परिवार अब साफ हो गया है। तब मैं क्या करूँ ? कुछ अधिक सोचने से मन में और एक स्थान भी याद आ गया। डेढ़ किलोमीटर यहाँ से दूर है। उतनी दूर जाने की आवश्यकता है। कोई बात नहीं , इसी थैली को छोड़ना अनिवार्य बात है, उसी तरफ गया। लेकिन जब उसी स्थान पर पहुँचा तब जो दृश्य देखा उससे मैं डर गया। क्योंकि वहाँ भीड़ थी, जिसके बीच एक आदमी को सारे लोग मिलकर मार रहे थे। वे बोले – कई दिन से हम देखते है कि कौन यहाँ कूड़ा–कचड़ा फेंक रहे हैं, अब ही तुमसे मिला है, ये सारा कूड़ा–कचड़ा साथ लेकर चला जा। कहना ही नहीं, सारे कूड़ा–कचड़ा उसने जबरदस्ती से वापस लिया। भीड़ में से एक चिल्लाया कि यदि इसके बाद कोई कूड़ा–कचड़ा लेकर आएगा तो मारकर हाथ और पैर तोड़ डालेंगे। मैंने सोचा कि क्या यह इतनी गलती की बात है। वहाँ से जल्दी ही बाइक को पीछे मोड़कर सोचा कि सड़क पर इस थैली को कहीं फेंक दूँ ? नहीं, लोगों से मार पड़ेगी।

मन में ऐसा विचार आया कि हे भगवान, कहीं भी लिखा नहीं कि कूड़ा–कचड़ा डालने का स्थान। कई प्रकार की चिंता जो आवश्यक और अनावश्यक थीं, मन में आईं। समय की चिंता भी मन में आयी कि सुबह 8.10 को कंपनी में ज़रूर पहुँचना है। तीव्रगति लेकर जल्दी कंपनी पहुँचा। बहुत दयनीयता से मैंने मेरी बाइक के हैन्डलों पर डाली गयी थैली की ओर देखा। पंचिंग स्थान पर पहुँचा और पंच किया। क्या करूँ समय तो 8.11 बजे हो गये। आधे घंटों की छुट्टी देनी होगी। लेकिन समस्या अब भी समाप्त नहीं हुई थी। क्या इससे मेरी अपमान होगी क्या ? क्या, इससे मेरा गौरव छूट जाएगा ? यह थैली बाइक के हैन्डल पर है, इस पर कोई ध्यान देगा क्या ? यदि किसी ने पूछ लिया तो क्या उत्तर दूँगा। इससे कुछ थड़कपन मन में हो गया है। उस दिन लगातार सारे दिन काम करने पर भी मेरे मन में उसी थैली का विचार था, जिसे सारे लोग नफ़रत की दृष्टि से देखते होंगे।

चार बजे की साइरन सुनने पर जल्दी ही बाइक लेकर बाहर गया। मेरी दृष्टि में वही थैली नज़र आ रही थी और लगा कि वह बाइक के हैन्डल पर झूल रही थी और मेरा मज़ाक कर रही थी। जाने के समय उसे छोड़ने को स्थान निकाल रहा। लेकिन कहीं भी छोड़ने को मन न लगा। मेरे मन में केवल एक ही वाक्य है कि यहाँ कूड़ा–कचड़ा फेंकना दण्डनीय है। नहीं, आगे ऐसे नहीं करना, यह तो हमारा ही देश है न। यहाँ सब स्थान साफ–सुथरा रहने दें। मैंने निर्णय लिया कि उसे घर में ही ले जाऊंगा।

घर पहुचने पर पत्नी को देखते ही मुझे कुछ लाज लगा। उसको पूरी बात बता दिया। क्षमा कीजिए... तूने बहुत खुशी के साथ जो माल मुझे दिया था, उसे सुरक्षित रूप से और दयनीयता के साथ वापस देता हूँ। इतने कहने पर हम दोनों को गुस्सा, दुख आदि लगे। इसके बीचों बीच सवेरे दिये गये वायदे के अनुसार ''पुट्ट एवं कटला'' खाया। रोज़ की तरह रात्रि बहुत देरी से ही सोया। लेकिन बीच में जागने पर केवल उसी की चिंता मन में थी।

– बाइक के हैन्डल में डाली गयी वह थैली

– यहाँ कूड़ा–कचड़ा फेंकना दण्डनीय

– हाथ पैर तोड डालेंगे

कुत्तों के रूदन, पक्षियों के अचानक शब्द आदि ने मेरी नींद को काट दिया। अगले दिन का सूर्योदय ने मुझे प्रभावित किया। वैकम मुहम्मद बशीर ने लिखा है कि एक और एक जोड़ने से, बड़ा एक मिलेगा। जैसे, कल और आज की थैली जोड़कर बड़ी थैली। कूड़ा–कचड़ा लेने वाले को देखकर प्रतीक्षा। कूड़ा–कचड़ा वाला वही है जो सभी घरों से कूड़ा–कचड़ा स्वीकार करके अपनी थकने वाली गाड़ी में रखकर आने वाला आदमी। कूड़ा–कचड़े का मूल्य नहीं, लेकिन मुझे मालूम है कि कूड़े–कचड़े वाले का मूल्य है। स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत

स्वच्छ भारत - स्वस्थ भारत

आयुषी
सुपुत्री अशोक कुमार डबास,
बठिंडा, पंजाब

रब को देखा है

अक्सर कहते हैं लोग कि
भगवान को किसने देखा है।
सिर्फ मन का विश्वास है वो
नहीं तो खुदा को किसने देखा है।

पर उसी से मिले वरदान में
मैंने साक्षात उसका रूप देखा है।
फक्र से कह सकती हूं आज मैं,
मैंने अपनी मां में रब को देखा है।

जीवन के हर पल में,
बस खुशियां बांटते देखा है।
छिपाकर अपने दुख सबसे
ग़म औरों के बांटते देखा है।

चलना होता हमें जिस रास्ते पर
उस रास्ते पर फूल बिछाते देखा है।
हर ख़्वाब को हक़ीकत बनाया
हमने तो बस ख़्वाब ही देखा है।

सच्चाई का दामन थाम
हर अन्धेरे से लड़ते देखा है।
हर मुश्किल हर बाधा से
अकेले ही लड़ते देखा है।

हां भगवान से मिले इसी वरदान में
मैंने साक्षात उसका रूप देखा है,
फक्र से कह सकती हूं आज मैं,
मैंने अपनी मां में रब को देखा है।

मेरी अर्थी उठा कर चलेंगे

जब सब मेरी अर्थी उठाकर चलेंगे
रिश्तेदार कंधे से कंधा मिलाकर चलेंगे,
जिन्होंने कभी एक घूंट पानी ना पूछा,
गंगा जल में मुझे नहला कर चलेंगे,

फटे चिथड़ो में उम्र गुज़री मेरी,
मगर मेरी अर्थी को सजाकर चलेंगे।
चलेगें साथ दुश्मन भी मेरे,
मगर वो कुछ मुस्कुराकर चलेंगे।

जिनके होठों पर निंदा रहती थी,
आज वही गुण गाते चलेंगे।
बचाते थे जो दामन मुझसे,
आज खुद आंसुओं से दामन भिगोकर चलेंगे।

हंसने के बाद क्यों रूलाती है दुनिया
ज़िन्दगी में क्या कसर रह जाती है बाकी,
मरने के बाद भी जो जलाती है दुनिया।

प्रधान कार्यालय में मनाए गए हिन्दी पखवाड़े का संक्षिप्त विवरण

राजभाषा विभाग द्वारा जारी निर्देशों के अनुसार कार्यालय में दिनांक 01 सितम्बर, 2016 से 14 सितम्बर, 2016 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। इस पखवाड़े का उद्घाटन दिनांक 01 सितम्बर, 2016 को मुख्य अतिथि महोदय के कर–कमलों से किया गया। इस अवसर पर महा प्रबन्धक (वित्त एवं लेखा) महोदय ने एक अपील भी जारी की, जिसमें उन्होंने इस कार्यालय में सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए ठोस प्रयास करने का आग्रह किया तथा उन्होंने कहा कि अपने दैनिक कामकाज में सरल, सहज और बोलचाल की भाषा का प्रयोग करते हुए राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन में अपना सकारात्मक सहयोग देते रहें। इस अवसर पर डा0 पूरनचंद टंडन, प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, कला संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय को विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि हिन्दी पखवाड़े का प्रयोजन अपनी भाषा के प्रति गरिमा का भाव सक्रिय करना है, क्योंकि भाषा संस्कृति की वाहिका होती है। देश की अस्मिता की पहचान होती है। हमें अपनी भाषा का सम्मान करना चाहिए तथा न केवल पखवाड़े में अपितु वर्ष भर हिन्दी में कार्य करना चाहिए। हम सब में भाषा के प्रति समर्पण का भाव होना चाहिए। इसलिए हमें अपने समस्त कार्यों में हिन्दी का प्रयोग करना चाहिए। इसके अतिरिक्त उन्होंने राजभाषा नियम, अधिनियमों तथा नीति की जानकारी दी तथा उन्होंने कहा कि भारत सरकार द्वारा जारी नियमों, अधिनियमों का अनुपालन करना हमारी जिम्मेदारी है, हमें अपने अधिकारों के साथ–साथ कर्तव्यों के प्रति भी सचेत रहना चाहिए।

इस अवसर पर सहायक प्रबन्धक (हिन्दी) ने कार्यालय में हिन्दी कार्यान्वयन में किए गए प्रयासों/उपलब्धियों की जानकारी सभी को दी। उन्होंने राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी वर्ष 2016–17 के वार्षिक कार्यक्रम की सभी मदों पर निर्धारित लक्ष्यों के बारे में बताने के साथ–साथ उनके अनुपालन की अनिवार्यता के बारे में जानकारी दी। राजभाषा विभाग द्वारा दिए जाने वाले विभिन्न प्रशिक्षणों तथा हिन्दी में कंप्यूटरों पर कार्य करने के लिए उपलब्ध सॉफ्टवेयरों की जानकारी दी। इसके पश्चात् कंपनी के प्रधान कार्यालय तथा सभी यूनिटों में हिन्दी के प्रयोग में वृद्धि करने हेतु उपलब्ध कराई गई सुविधाओं एवं उनके प्रयोग से राजभाषा हिन्दी प्रयोग में हो रही वृद्धि के बारे में बताया। इसके पश्चात् पखवाड़े के दौरान आयोजित की जाने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं कार्यक्रमों की जानकारी दी गई।

इस पखवाड़े के दौरान निम्नानुसार कार्यक्रमों का आयोजन किया गया :–

1. हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 02–09–2016 को किया गया, जिसमें 19 कार्मिकों ने भाग लिया।
2. कविता/नारा लेखन प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 05–09–2016 को किया गया, जिसमें 27 कार्मिकों ने भाग लिया।
3. हिन्दी वाक प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 06–09–2016 को किया गया, जिसमें 07 कार्मिकों ने भाग लिया।
4. हिन्दी टंकण कार्यशाला का आयोजन दिनांक 07–09–2016 को किया गया, जिसमें 16 कार्मिकों ने भाग लिया।
5. हिन्दी टिप्पण लेखन एवं मसौदा लेखन प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 08–09–2016 को किया गया, जिसमें 27 कार्मिकों ने भाग लिया।
6. हिन्दी प्रश्न मंच प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 09–09–2016 को किया गया, जिसमें 20 कार्मिकों ने भाग लिया।
7. हिन्दी कार्यशाला का आयोजन दिनांक 12–09–2016 को किया गया, जिसमें अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक महोदय सहित 17 वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया तथा राजभाषा विभाग के विशेषज्ञ द्वारा हिन्दी में कार्य करने हेतु प्रशिक्षण दिया गया।

हिंदी पखवाड़े का समापन दिनांक 14–09–2016 को किया गया। हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह वाले दिन अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक

महोदय एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारी तथा सभी कार्मिक उपस्थित थे तथा इस अवसर पर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के उप निदेशक (राजभाषा विभाग) महोदय श्री भूपेन्द्र सिंह को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। उनका स्वागत महा प्रबन्धक (वित्त एवं लेखा) महोदय द्वारा पुष्प गुच्छ से किया गया। इस पखवाड़े के समापन के अवसर पर उप महा प्रबन्धक (विपणन) महोदय द्वारा हिन्दी दिवस के अवसर पर जारी माननीय गृह मंत्री जी का संदेश पढ़कर सुनाया गया। इसके पश्चात् सहायक प्रबन्धक (हिन्दी), श्रीमती शान्ति ध्रुव ने हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित की गई प्रतियोगिताओं तथा अन्य कार्यक्रमों की रिपोर्ट प्रस्तुत की। मुख्य अतिथि महोदय ने इस पखवाड़े के दौरान आयोजित किए गए कार्यक्रमों तथा कंपनी में राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन की स्थिति जानकर प्रसन्नता व्यक्त की तथा उन्होंने राजभाषा अधिनियम 1963, नियम 1976 की जानकारी देने के साथ–साथ राजभाषा विभाग द्वारा दिए जाने वाले प्रशिक्षणों की जानकारी दी। उन्होंने कंप्यूटर पर यूनिकोड में कार्य करने की दक्षता हासिल करने पर बल देने के साथ–साथ सभी को हिन्दी में कार्य करने के लिए अपनी मानसिकता बढ़ाने के लिए कहा।

इसके पश्चात हिंदी पखवाड़े के दौरान सफलता प्राप्त तथा पूरे वर्ष हिन्दी में टिप्पण एवं मसौदा लेखन करने वाले सभी कार्मिकों को अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय, मुख्य अतिथि महोदय तथा महाप्रबन्धक (वित्त एवं लेखा) के कर–कमलों से वस्तु रूप में पुरस्कार/प्रोत्साहन वितरित किए गए।

इसके पश्चात् अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक महोदय का संभाषण हुआ। महोदय ने अपने संभाषण में एच.आई.एल की राजभाषा हिन्दी के क्षेत्र में उपलब्धियां बताने के साथ–साथ सभी कार्मिकों को हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रेरित किया तथा उन्होंने कहा कि कार्यालय के सभी कंप्यूटरों पर हिन्दी में कार्य करने की सुविधा उपलब्ध है, सभी फार्म तथा मानक मसौदे द्विभाषा में उपलब्ध है, इनका प्रयोग करके अपना अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करके राजभाषा से संबंधित नियमों/अधिनियमों/लक्ष्यों को पूर्णतःप्राप्त करें, यह हमारा नैतिक तथा संवैधानिक दायित्व है। अध्यक्ष महोदय ने पखवाड़े के दौरान आयोजित की गई सभी प्रतियोगिताओं में सफलता प्राप्त सभी कार्मिकों को बधाई दी।

उप महा प्रबन्धक (मा.सं. एवं प्र.) ने एच. आई. एल. की ओर से मुख्य अतिथि महोदय का हार्दिक धन्यवाद किया तथा इसके साथ हिन्दी पखवाड़े का समापन किया गया।

अशोक कुमार राव,
वरिष्ठ विश्लेषक,
रसायनी, महाराष्ट्र

राष्ट्रभाषा

संस्कृत की लाडली बेटी है हिन्दी, बहनों को साथ लेकर चलती है अर्थात् राज्यों की भाषाओं का भी सम्मान करती है।

14 सितम्बर 1949 वह शुभ दिन था जब हिन्दी को सरकारी कामकाज की भाषा बनाकर राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया था।

हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने हिंदी को वाणिज्यिक और व्यावसायिक भाषा बनाने का संकल्प किया है। उद्योग–धन्धों, व्यापार तथा वित्तीय क्षेत्रों में हिंदी का ज्यादा से ज्यादा उपयोग करने पर ज़ोर दिया जा रहा है। हाल में प्रधानमंत्री जी ने जन–धन योजना शुरू की जिसका फायदा गरीबों/ग्रामीणों को मिले, इस योजना से जुड़ने के लिए हिंदी बेहद ज़रूरी है। इस वजह से बैंकों में हिंदी का उपयोग बढ़ाने का निर्देश दिया है। हिंदी का उपयोग आर्थिक क्षेत्र में बड़े पैमाने पर किया जा रहा है क्योंकि 90 फीसदी आबादी को अंग्रेज़ी नहीं आती है।

हिंदी को बढ़ावा देने में हमारे सूचना प्रसारण का बहुत बड़ा योगदान है। पिछले कुछ वर्षों पूर्व अंग्रेज़ी में समाचार सुनाये एवं दिखाये जाते थे जो आम लोगों की समझ से परे था परन्तु आज सारे टी.वी. चैनल पर हिन्दी में समाचार प्रतिपादित किये जाते हैं। जो आम लोगों में समझ को बढ़ावा दे रहे हैं। टी.वी. समाचार माध्यम से हिन्दी का प्रचार एवं प्रसार सुगमता से जन–जन में पहुंच रहा है।

फिल्मों में हीरो/हीरोईन हिंदी में बोलते हैं। परन्तु जब मीडिया में इन्टरव्यू देते हैं तो अंग्रेज़ी में सवाल/जवाब देते हैं। फिर उन्हें हिंदी में बोलने को कहा जाता है। आज 150 से भी अधिक देशों में हिंदी बोलने वाले मिल जायेंगे। रोज़गार और व्यापार के लिए विदेशों में गये भारत वासियों का दूसरे देश में अपनी भाषा के प्रति असीम प्रेम उमड़ता है, जिसके कारण अन्य देशों में हिंदी बोलने वालों की संख्या बढ़ी है।

आज हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय भाषा बनाने का दबाव बनाया जा रहा है। देश व विदेश में बहुचर्चित फिल्म स्लमडॉग के फिल्म निर्माता डैनी बॉयल विदेशी शख़्स हैं। उसके गीत ''जय हो'' ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठा दिलाई।

ऑक्सफोर्ड, कैम्ब्रिज, हावर्ड जैसे विश्व विख्यात संस्थाओं में हिंदी की अलग कक्षाएं चलाई जाती हैं। पिछले दो दशकों में हिन्दी का विकास बहुत तेज़ी से हुआ है। विभिन्न देशों में 100 से ज्यादा पत्रिका हिंदी में प्रकाशित हो रही है। अनेक देशों में टी.वी. चैनेल के माध्यम से हिन्दी के कार्यक्रम प्रसारित हो रहे हैं।

पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति जार्जबुश ने 114 मिलियन डॉलर की विशेष राशि हिंदी एवं चीनी भाषायें सिखाने के लिए मंजूर की थी।

अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा का तो मानना है कि हिन्दी सीखो और भारत के साथ व्यापार करो। ये हमारी हिन्दी की पहचान का स्तर है। आज की नौजवान पीढ़ी ऑर–कुट, फेस बुक और सोशल नेट वर्किंग साइटों में अपनी भावनाओं को हिन्दी में व्यक्त कर रही है तथा गुगल में इंडिक ट्रांसलिटरेशन, याहू का इंडिक चैट या हिंदी में रेडिफ मेल में सॉफ्टवेयर मुफ्त में उपलब्ध हैं।

श्रीमती खुशजीत कौर,
सहायक,
बठिंडा, पंजाब

दबाव

समस्या उम्र के किसी भी दौर में आ सकती है। इसका संबंध दिमागी काबिलियत से नहीं बल्कि काम पर ध्यान केंद्रित न कर पाने से है, जो भी हो, कमज़ोर याद्दाश्त् काम में मुश्किलें पैदा कर सकती है।

किसी विचार को पूरा होने, व्यक्त होने या काम पूरा होने के लिए वक्त लगता है। कार्य करने से पहले से योजना बनायें। समय सीमा का दबाव बनता है तो कुछ बातें याद आतीं हैं और कुछ नहीं आती। इसलिए एक बार में एक ही बात पर ध्यान केन्द्रित करें।किसी के द्वारा कही जा रही बात पर पूरा ध्यान केंद्रित करें। मिली जानकारी पर सोच–विचार करें व आगे बढ़ें।

शोरगुल से दूर, शांत जगह सूचना को दिमाग में संगठित करने के लिए श्रेष्ठ होती है। टी. वी. से दूर कोई छोर, कमरा या मकान के पिछले हिस्से में, ट्रेफिक के शोरगुल से दूर किसी जगह में काम करने से चीज़ें याद रहती हैं।

उम्र ज्यादा हो तो युवा की तुलना में सूचना तथा बात प्रोसेसिंग में वक्त लगता है। तत्काल कोई बात याद न आए तो धैर्य रखें, थोड़ी देर रिलैक्स हो जायें, किसी और विषय पर ध्यान ले जाएं और भूली हुई बात को खुद–ब–खुद दिमाग में आने दें, ज़ोर न डालें।

प्रेरणा – हर दिन एक चुनौती है हर दिन का प्रयत्न आपके समाज, आपकी ज़िंदगी और कैरियर को गढ़ता है लेकिन आप उसे उलट कर सकते हैं। घर का कचरा साफ करने, अलमारी में करीने से किताबें जमा कर देने से भी उपलब्धि का अहसास हासिल किया जा सकता है।

- वर्ग या शब्द पहेलियां हल करने पर भी यह अहसास संभव है।
- काम खत्म करने की समय–सीमा तय करके समयबद्ध तरीके से लक्ष्य हासिल करने की आदत डालें। छोटे–छोटे कामों के लिए डैड–लाइन तैयार करें।
- किसी को परवाह नहीं होती कि आपने अपने कितने फीसदी लक्ष्य हासिल कर लिये। दूसरों की सराहना व प्रशंसा पर अपनी कीमत आंकना बंद कीजिए। इससे हताशा ही मिलेगी।
- खुद ही अपने आप को शाबाशी दीजिए। खुद से ही रेस लगाएं और जीतने पर मन में कहिये ''वाह मैंने कर दिखाया''।

बापट महादेव वासुदेव
लेखापाल,
रसायनी, महाराष्ट्र

राष्ट्र की उन्नति के लिये कामगारों का कर्तव्य

देश के उत्कर्ष के लिए यंत्र सामग्री और कारखानों की आवश्यकता होती है। लेकिन इससे भी अधिक आवश्यकता होती है सदगुणों की। यदि सदगुणों का विकास नहीं हुआ तो उपकरणों और मशीनों का महत्व सिर्फ लोहे जैसा है।

भारत के औद्योगिक विकास व उन्नति के लिए हमें अनुशासनहीनता, काम न करना, सहयोग का अभाव, काम के प्रति अज्ञानता की मानसिकता बदलनी चाहिए। हमारे श्रमिकों के बड़े पैमाने में अनुशासन का महत्व, जी–तोड़ मेहनत और आपस में सहयोग की भावना के साथ विनम्रता भी होनी चाहिए। प्रत्येक कामगार के मन में उसे दिए हुए काम को पूरा करने के लिए कर्तव्य की भावना एवं राष्ट्र और समाज पर उसके सकारात्मक या नकारात्मक प्रभाव की जानकारी होनी चाहिए।

दूसरे विश्वयुद्ध में जर्मनी और जापान, ये दोनों देश शत–प्रतिशत बरबाद हुए थे। उनका पूरा विनाश हुआ था। बम और तोपों से अनेक शहरों में अनेकों इमारतें और कारखाने राख हो गए थे। लेकिन वहां के लोग एक पीढ़ी के दौरान ही अपना विकास करके पौराणिक फिनिक्स पक्षी की तरह उभरकर सामने आए।

उन्होंने नए कारखाने व ईमारतों का निर्माण किया, व्यापार को बढ़ाया, उत्पादित माल का दर्जा सबसे अच्छा रखा और आज वे विकसित देश माने जाते हैं, जबकि हमारे देश का विकास आज़ादी के 69 साल बाद भी अधूरा ही है। हमारा देश कितने दिन तक विकासशील देश रहने वाला है। जब तक हमारे देशवासियों की सोच विकसित नहीं होती, हमारे नेतागण निस्वार्थी नहीं होते, देश के प्रति प्रेम और स्वाभिमान की भावना जागरूक नहीं होती है, तब तक हमारे देश का विकास होना नामुमकिन है। हमें नाराज नहीं होना चाहिए लेकिन यह एक कटु सत्य है। इसके कारण ही हम पुराने समय में अपनी आज़ादी खो बैठे थे। यदि हम जागृत व एकजुट रहते तो हमारे हिंदुस्तान पर मुगल और अंग्रेज़ राज नहीं करते। आज वस्तुओं की गुणवत्ता के लिए जापान और जर्मन देश का नाम पूरी दुनिया में लिया जाता है। हम सबको अनुशासनहीनता, अनुचित आचरण, उत्पादित माल का दर्जा अच्छा न होना, आंदोलन, बेवजह की राजनीति और निजी स्वार्थ आदि दुर्गुणों का त्याग करना चाहिए। तभी हमारे देश का सर्वांगीण विकास होगा।

जय हिन्द

सावधान रहना है या गाफिल

क्या आप के पास सावधान रहने का गुण है ? क्या आपको हमेशा सतर्क रहना चाहिए ? आप सोचिए कि क्यों इस गुण को बढ़ाने की हमें वैयक्तिक और सामाजिक जीवन में आवश्यकता है ? यदि प्रत्येक व्यक्ति ने स्वयं में इन गुणों का विकास किया तो पूरे देश में काफी बड़ा बदलाव आ सकता है। यह गुण हमारा राष्ट्रीय गुण होना चाहिए।

सतर्कता यानी हमारे चारों ओर जो चल रहा है, उसका अपनी बुद्धि से, मन से, खुली आंखो से और कान से अवलोकन करके हमें क्या करना चाहिए, यह सोचने की बात है। यदि हमने यह तय नहीं किया तो हम गाफिल होकर बेफ़िकर हो जायेंगे। जंगल में रहने वाले जानवर भी जीवन जीने के लिए अच्छी तरह से सावधानी बरतते हैं। खाने का इंतजाम और सुरक्षा इन दोनों को पाने के लिए वे मन, आंख, और कान से प्रयास करते हैं। हमें उनको अपना गुरू मानना चाहिए।

सावधानी का मतलब है सजग रहना, सावधानी यानि हर वक़्त सतर्क रहना। वर्तमान में क्या चल रहा है एवं भविष्य में क्या होगा, इसका हमेशा विचार करना चाहिए। इसी को सावधानी कहते हैं। इसके अलावा हमारे पड़ोसी देश क्या कर रहे हैं इसकी जानकारी न होना ही दुर्लक्ष या गाफ़िल रहना है। सावधानी बरतने वाला आदमी हमेशा बुद्धि, मन और शरीर से चपल, स्वस्थ और सुरक्षित रहता है और जो आदमी बुद्धि, मन और तन से हमेशा सुस्त रहता है वह असुरक्षित रहता है, और खतरों से घिरा रहता है। भविष्य में आने वाले दिनों में क्या होगा इसके बारे में हमें हमेशा विचार करना चाहिए।

राष्ट्रीय जीवन में यह सदगुण अत्यंत आवश्यक है। जो देश गाफ़िलता छोड़ के हर वक़्त सावधानी बरतते हैं उस देश में बम धमाके, आतंकी हमले, दहशतवादी घटनाएं, विदेशी घुसपैठ, नशीले पदार्थों का व्यापार, जाली नोटों का चलन जैसी घटनाएं नहीं घटती। इज़रायल का उदाहरण आज पूरी दुनिया के सामने है। इसलिए भारत के प्रत्येक नागरिक को देश की सीमा पर सतर्कता रखने वाले जवानों की तरह अपना कर्तव्य निभाना चाहिए और कानून व पुलिस की मदद करनी चाहिए। हम रहेंगे सावधान तो देश बनेगा महान।

दान का महत्व

प्रत्येक धर्म में दान का महत्व बताया गया है। भारतीय संस्कृति ने ऐसी जवीन प्रणाली बनाई है कि हर एक कुटुंब प्रमुख को रोज़ कुछ ना कुछ दान करना चाहिए। जो भी याचक हमारे द्वार पर आयेगा उसको भिक्षा देना आवश्यक है। अतिथि को भोजन देना, गांय को चारा देना, अपने पड़ोसियों के हालचाल पूछना, बूढ़े और असहाय लोगों की सेवा करना, मां–बाप का सम्मान करना यह हमारा कर्तव्य व नित्यकर्म होना चाहिए।

समय के अनुसार दिन–प्रतिदिन आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियों में बदलाव होता रहता है। आज लोग गरीब को दान नहीं देते बल्कि उसके बदले में अनेक सामाजिक संस्थाओं को दान देते हैं। दान का उपयोग अच्छी तरह से होना चाहिए। दान सत्पात्री होना चाहिए।

स्वार्थ के साथ–साथ परमार्थ की भी आवश्यकता होती है। दान धर्म का मूल है, दान त्याग की भावना है। अपनी आमदनी से हमें जो भी कुछ मिलता है उसका एक अंश हमें समाज में गरीबी के लिए, ज़रूरतमंद लोगों के लिए देना चाहिए। हम अपने देश से, समाज से अनेक प्रकार की सुविधाएं और सेवाएं लेते हैं, तो हमें भी देश को बदले में कुछ देना चाहिए। सिर्फ दूसरों से लेने की आदत अच्छी नहीं है। समाज को कुछ न कुछ देने की आदत आवश्यक है। दान–धर्म के लिए बहुत पैसों या धन की आवश्यकता नहीं है। त्याग की प्रवृत्ति की आवश्यकता है। "इदं न मम" कहके कुछ दान करना चाहिए। मन में दान की इच्छा होनी चाहिए। यह हमारी प्रवृत्ति बननी चाहिए। आप कितना दान देते हैं यह महत्वपूर्ण नहीं है और अमीर आदमी दानवीर होंगे ऐसा भी नहीं है। कई बार गरीब आदमी भी अधिक त्याग करते हुए दिखाई देते हैं। एक बार एक साधु बस में यात्रा कर रहे थे, उनके पास टिकट के लिए पूरे पैसे नहीं थे। बस के संवाहक (कंडक्टर) ने उनको कहा आप नीचे उतर जाइए, नहीं तो आपको टिकट के पूरे पैसे देने पड़ेगे। यह सुनकर एक भिखारी ने अपनी थैली से कुछ पैसे निकालकर कंडक्टर को दिये और साधु को टिकट देने को कहा। उस बस में अनेकों लोग थे, उनके पास पैसे भी रहे होंगे, लेकिन एक भी आदमी ने पैसे नहीं दिये। यही हमारे समाज की आज की नीति है। दान की जो भावना एक भिखारी ने दिखाई वह दूसरे लोग नहीं दिखा सके। मन में दान की भावना होनी चाहिए। गरीबों का एक रूपया श्रीमंत लोगों के लाखों रूपयों से भी ज्यादा है। भावना महत्वपूर्ण है सिर्फ पैसे नहीं। पंडित मदन मोहन मालवीय ने लोगों से एक–एक रूपया दान में लेकर काशी हिंदु विश्वविद्यालय खड़ा कर दिया और विद्या के दान को भी सर्वोत्तम दान माना गया है।

थोडे दिन पहले उत्तराखंड, केदारनाथ में जो बड़ी नैसर्गिक आपदा आई उसमें अनेकों लोगों की जानें गई तब कई देशवासियों ने त्याग की भावना से काम किया, और वहां के लोगों की सहायता के

लिए दान दिया। हमारे जवानों ने अपने प्राण न्योछावर किए। देश और समाज के प्रति इस प्रकार दिखाया गया प्रेम अनमोल और सराहनीय है। उनको शत्–शत् प्रणाम। इसी भावना से हमारे देश की प्रगति होगी और हम जापान और जर्मनी जैसे देशों की तरह उन्नति व विकास के ऊंचे शिखर पर पहुंचेंगे। हमें हर आपत्ति का डटकर सामना करना चाहिए। स्वतंत्रता संग्राम में अनेक वीरों ने प्राण न्योछावर किए थे। सरदार भगत सिंह, चन्द्रशेखर आज़ाद, सुखदेव, रानी लक्ष्मीबाई, वीर सावरकर, लाला लाजपतराय, मदनलाल धींगरा, वासुदेव बलवंत फड़के, सुभाषचंद्र बोस, अनंत कान्हेरे, अशफ़ाक उल्ला खान, चाफेकर बंधु, महात्मा गांधी व अनेकों ने अंग्रज़ों की यातनाएं सही और भारत मां के लिए बलिदान दिया। यह उनके प्राणों का दान ही है।

आज हम उनकी याद सिर्फ उनकी जयंती और पुण्य तिथि के दिन करते हैं। हमें उनके आदर्शों को हमेशा याद रख के अपने देश के प्रति अपना कर्तव्य निभाना चाहिए। उन्हीं के कारण आज हम आज़ाद हैं। हमें स्वराज मिला लेकिन हम उसको सुराज्य में नहीं बदल सके, यह खेद की बात है। उसका कारण हमारा निजी स्वार्थ है। हम में देश प्रेम की भावनाओं का नितांत अभाव है और जिसके कारण लोग आज किसी भी तरह से धन जुटाने में लगें हैं। आज सबसे बड़ा काम घूस लेना और देना है। देश की चिंता किसी को नहीं है। जिन सामान्य लोगों को देश की थोड़ी बहुत चिंता है भी, वे लोग कुछ नहीं कर सकते हैं। उनकी ताकत अधूरी है। उन्हें कोई अच्छा पथप्रदर्शक व मार्गदर्शक नहीं मिल रहा है। चलो हम देश की सलामती के लिए भगवान से प्रार्थना करते हैं, क्योंकि लोग कुछ सुधरेंगे ऐसा नहीं लगता है। काश हमारे देश में पहले जैसे स्वर्णिम दिन आएं। पुराने जमाने में भारत का नाम सारे संसार में शिक्षा के क्षेत्र में, आर्थिक उन्नति के क्षेत्र में लिया जाता था। नालंदा, तक्षशीला जैसे विद्यापीठ हमारे देश में थे। चीन, जापान जैसे देशों से लोग यहां शिक्षा पाने के लिए आते थे। हमारा व्यापार दूसरे देशों से होता था। यहां भवभूति, कालिदास, वाल्मीकि, जैसे महाकवि हुए। रामायण, महाभारत जैसे महान ग्रंथ रचे गए। आज भी अंग्रेज़ लोग शिवाजी महाराज और पहले बाजीराव पेशवा की युद्ध नीति का अभ्यास करते हैं। हमारे आयुर्वेद का अभ्यास विदेशों में होता है और हम विदेशियों की नकल कर रहे हैं। उनका अच्छा आदर्श–निस्वार्थपन, कर्तव्यपालन, ईमानदारी, समय का पालन, स्वाभिमान, देश के प्रति अभिमान, अनुशासन, सामाजिक आदर्श, कानून का पालन करना आदि को हम ग्रहण नहीं करते और जो नहीं सीखना चाहिए वह सीखते हैं। हमें केवल अच्छी बातों का अनुकरण करना चाहिए। यदि इन सभी आदर्शों का हमने अनुकरण किया तो हमारा भारत देश भी विश्व में आदर्श देश बनेगा। हम प्रार्थना करें कि यह अच्छा दिन जल्दी ही आए और हम सभी भारतवासी इसके लिए कटिबद्ध हो जाएं।

धर्मा मोशल, सहायक,
बठिंडा, पंजाब

यात्रा संस्मरण

मैं अपने परिवार के साथ दिल्ली से पिथौरागढ़ घूमने गई। हम सब मेरे पति व मेरे दोनों बेटे आकाश व गगन हर साल गर्मियों में अपने गांव पिथौरागढ़ जाते हैं। शहर की भीड़–भाड़, शोर शराबे से दूर पहाड़ों की घाटियों में जो आनंद आता है उसका मजा ही अलग होता है। पिथौरागढ़ एक हिल स्टेशन है। यह एक घाटी में बसा है। इसके चारों ओर पहाड़ ही पहाड़ नज़र आते हैं यह चारों ओर पहाड़ों से घिरी हुई है। दिल्ली से 500 कि.मी. की दूरी में है। यहां पर बस व टैक्सी के द्वारा ही पहुंचा जाता है। यहां के लोग बहुत ही भोले–भाले होते हैं। रहन–सहन भी साधारण है, हिन्दी भाषा का प्रयोग ज्यादा होता है।

हर साल की तरह इस साल भी हम दिल्ली के आनंद विहार बस स्टेशन पहुंचे। यहां से हम सुबह 6 बजे दिल्ली से टनकपुर जाने वाली डिलक्स बस में बैठ गये और शाम के 3 बजे टनकपुर पहुंच गये। वहां हम सभी रात को होटल में रूके और सुबह 5 बजे टैक्सी करके पिथौरागढ़ रवाना हो गये, यहां से तराई खत्म और पहाड़ों का रास्ता शुरू हो जाता है। यह रास्ता रात को बन्द हो जाता है और सुबह 05 बजे ही खुलता है क्योंकि यह रास्ता खतरनाक है, रात को कोई दुर्घटना न हो जाए। इसलिए किसी को भी रात को नहीं जाने देते। रास्ते में बच्चे पहाड़ों व जंगलो को देखकर बहुत ही खुश हो रहे थे।

टैक्सी करने से यह सुविधा होती है कि उसे कहीं भी रोका जा सकता है और अपना सफर भी आसान हो जाता है। हम जैसे–जैसे आगे जा रहे थे वैसे–वैसे ही मौसम में बदलाव आ रहा था। दिल्ली की झुलसती हुई गर्मी और यहां के मौसम में इतना अंतर, हम सभी ने अपने गरम कपड़े पहनें। रास्ते में खाना खाया व चाय पी व कुछ न कुछ खाते–पीते पहाड़ों का नज़ारा देखते हुए पता ही नहीं चला कि हम अपने हिल स्टेशन पिथौरागढ़ (शहर) में कब पहुंच गये, यहां थोड़ी देर रूकने के बाद अपने गांव डोडार पहुंच गये। डोडार देवदारों व चीड़ के पेड़ों से घिरा हुआ है और यह पहाडों की चोटी में बसा हुआ हमारा छोटा सा गांव है। यहां का नजारा बहुत ही अद्‌भुत है। यहां के सीढ़ीनुमा खेत, चारों तरफ हरियाली ही हरियाली, नदियां, झरने, झरनों से बहता हुआ पानी बहुत ही अच्छा लगता है और सामने से हिमालय की चोटियां जो बर्फ से ढकी हुई दिखती है। ऐसा लगता है मानो चांदी की चादर ओढ़ी हुई है। यहां न दिन का पता चलता है न रात का, समय कैसे बीत जाता है पता ही नहीं चलता यहां हम सब भूल जाते हैं। जो नींद न आने की बीमारी का शिकार हो, वह अगर यहां आ जाए तो वह दवाईयों को लेना बंद कर देगा क्योंकि यहां पर इन दवाईयों को लेने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी, क्योंकि यहां रात को जैसे ही बिस्तर पर गये पता ही नहीं चलेगा कि कब नींद आ गई। सुबह चिड़ियों के चहचहाने से ही नींद खुलती है और जब सुबह उठकर बाहर देखते हैं तो उसका भी अलग ही आनंद होता है।

यहां पर रात का नज़ारा भी अद्‌भुत होता है। ऐसा लगता है जैसे आसमान से सभी तारे ज़मीन में आकर टिम–टिमा रहे हैं और इतनी शान्ति होती है कि मैं उसका वर्णन नहीं कर सकती। लोग मरने के बाद स्वर्ग जाते है मैं बिना मरे ही स्वर्ग में आ गई। पहाड़ों में देवी–देवताओं का वास होता है, यहां पर पूजा पाठ भी बहुत होता है। यहां पर जगह–जगह मन्दिर बने हुए हैं। सभी की भगवान में आस्था है और जो सच्चे मन से पूजा करता है भगवान उसकी मनोकामनाएं जरूर पूरी करता है।

अब मैं उस जगह का वर्णन कर रही हूं जहां जाकर हम सभी के होश उड़ गये थे। उस जगह का नाम है ''घाट''। घाट ऐसी जगह है जहां पर सभी प्रकार के धार्मिक कार्य होते हैं। यहां पर नदियां आपस में मिलती हैं। यह हिन्दुओं का धार्मिक स्थल है। इसे छोटा हरिद्वार भी कहा जाता है। दूर–दूर से लोग यहां पूजा–पाठ व स्नान करने आते हैं। हम सभी ने सोचा कि इस बार हम लोग पिथौरागढ़ आये हैं तो घाट भी घूम आते हैं। पूजा–पाठ व स्नान भी कर लेंगे और देख भी आयेंगे, हमने टैक्सी ली और चल पड़े घाट की तरफ, 2 घन्टे बाद हम लोग टैक्सी से वहां पहुंचे आगे कोई वाहन नहीं जा सकता था केवल पैदल चलकर ही आगे का रास्ता तय करना पड़ता है। टैक्सी से उतर कर हम सभी बहुत खुश हुए, हमने सोचा कि पास ही है लेकिन जब चलने लगे तो पहले एक बड़ा सा लकड़ी का पुल आता है, जैसा लक्ष्मण झूला है वैसा ही, हमने पुल पर जैसे ही पैर रखा वह हिलने लगा वहीं पर हम सभी डरने लगे जैसे तैसे पुल पार किया हमने सोचा कि पुल पार करते ही होगा मन्दिर जहां पूजा करनी होगी इतनी बड़ी नदी थी पुल भी हिल रहा था पानी की आवाज़ भी डरा रही थी, हमारे साथ पूजा कराने वाले पंडित जी भी थे। उनसे जब हमने कहा कि पंडित जी अब कहां जाना है ? तो उन्होंने कहा ''मेरे पीछे–पीछे आ जाओ'', हम उनके पीछे चलते रहे। रास्ता इतना संकरा था सिर्फ एक पैर ही रखने की जगह थी। पहाड़ो के बीच अगर हम में से किसी का भी पैर फिसल जाता तो वह बचता नहीं, सीधा नदी में जाता और उसका बचना नामुमकीन होता, नदी का बहाव भी बहुत ही तेज़ था। हम सभी से कहा गया कि नीचे नदी को नहीं देखना सिर्फ अपने रास्ते को देखो हम सभी ने राम–राम जपते हुए रास्ता पार कर लिया हम सभी के दिल की धड़कनें इतनी तेज़ी से धड़क रही थी कि मैं आप को बता नहीं सकती जब हम मन्दिर के पास पहुंचे तो हमने थोड़ी सांस ली और बैठकर उस तरफ देखा जहां से हम आये थे। क्या नज़ारा देखते हैं ? कि नदी के किनारे लोगों की कितनी ही चिताऐं जल रही हैं और नदी के दूसरी तरफ लोग पूजा–पाठ कर रहे हैं। यह सब देखकर एक बार तो हम सभी ने सोचा कि हम यहां क्यों आए, हमें यहां नहीं आना चाहिए क्योंकि मौत से सभी को डर लगता है, हमें भी लगा क्योंकि दिल की धड़कने अभी भी कम नहीं हुई थीं, लेकिन यह एक सच्चाई की बात है कि मौत सभी को आती है उससे कोई भी भाग नहीं सकता।

थोड़ी देर आराम करके हमने भी पंड़ित जी से पूजा करवाई और मैंने तो मना कर दिया कि मैं वापस उस रास्ते से नहीं जाऊंगी और अपने बच्चों को भी नहीं जाने दूंगी, फिर किसी तरह मेरे पति ने वहां के लोगों से पूछा कि कोई और रास्ता है क्या वापस जाने का ? किसी ने बताया कि है एक दूसरा रास्ता है लेकिन वह दूर पड़ेगा हम सभी खुश हो गये कि चलो दूसरा रास्ता तो है जाने का, हम सभी ठीक–ठाक अपने घर पहुंच गये। घर पहुंचने के बाद मैं उस रात बिल्कुल भी सो नहीं पाई डर के मारे। अभी भी जब वहां के बारे में सोचते हैं तो रोंगटे खड़े हो जाते हैं। ऐसी रही मेरी यात्रा।

गोविन्द सिंह यादव
रसायनी, महाराष्ट्र

सुरक्षा और हम

आओ मित्रों सोचें हम,
हमें कैसा देश बनाना है।
लंगडे, लुलों, लाचारों का,
या स्वस्थ सुभांगों, स्फूर्त जनों का,
सुंदर देश बनाना है।

है यदि दूसरा चयन हमारा,
तो यूँ न समय बर्बाद करो।
यह सृजन काल की बेला है,
सोचो समझो प्रयास करो।

सुरक्षा उपकरणों को अपनाकर,
सुरक्षा आत्मसात करो।
समझ के इसको मजबूरी,
इस जीवन से मत घात करो।

सुरक्षा न अपनाने का,
परिणाम भयंकर होता है।
प्राणों के खो जाने का,
खतरा इसमें होता है।

अंग भंग हो, देह अपंग हो,
जीवन लाचार हो जाता है।
फिर पल–पल की दिनचर्या में,
मानव अपमानित होता है।

सुरक्षा को अपनाने से,
जीव सुरक्षित होता है।
स्वस्थ रहें और प्राण बचें,
जीवन सुखमय हो जाता है।

सुख, जीवन के दरकारों को,
सुरक्षा संदेश हमारा है।
सन्देश नहीं यह भाव सुधा,
जीवन को स्वर्ग बनाता है।

श्रीमती खुशजीत कौर
सहायक
बठिंडा, पंजाब

जीत की रात

आज जीत की रात
पहरूए सावधान रहना
खुले देश के द्वार
अचल दीपक समान रहना।

ऊंची हुई मशाल हमारी
आगे कठिन डगर है
शत्रु हट गया, लेकिन उसकी
छायाओं का डर है।
शोषण से मृत है समाज
कमज़ोर हमारा घर है।
किंतु आ रही है नई ज़िंदगी
यह विश्वास अमर है।

जन गंगा में ज्वार
लहर तुम प्रवाहमान रहना
पहरूए सावधान रहना

सुत कितने पैदा किए, जो तृण भी नहीं थे
और वे भी जो पहाड़ों से बड़े थे
किंतु तेरे मान का जब वक्त आया
पर्वतों के साथ तिनके भी लड़े थे

ये सुमन लो, यह चमन लो, नीड़ का तृण–तृण समर्पित
चाहता हूं, देश की धरती तुझे कुछ और भी दूं
हर पल–पल सचेत रहना,
पहरूए सावधान रहना,

कब जागेंगे सोए सूरज, कब होगा उजियारा
जीना हो तो मरना सीखो, गूंज उठे यह नारा
सारा देश हमारा

अभिषेक कौशिक
सहायक अभियन्ता,
बठिंडा, पंजाब

जय जवान-जय किसान

पृथ्वी का सिरमौर है, मेरा भारत महान है
भांति–भांति के मौसम बदले, प्रकृति के गलियारों में,
निराली है हज़ारों में, सपूतों की ये शान,
गर्व से मातृभूमि कहे,....जय जवान....जय किसान,

भारत–माता पर मंडराता आज फिर घना साया है।
देशप्रेम की बोली भूलकर,"असहिष्णु" जन–मानस
छलनी करते नैतिक–मूल्यों को, विचित्र भय आया है।
अमर हो गए सरहद पर,"हनुमनथप्पा" जैसे जवान
अपने परिवार–समाज को त्याग कर, सब–संकटों से अनजान,
ऐसे वीर–बांकुरों ने, मांगा कभी ना किराया है।।
राष्ट्रद्रोहियों का मस्तक शर्म से, कभी न झुक पाया है।।
इस असमंजस में हर भारतीय, कौन अपना कौन पराया है।

राष्ट्र की वर्तमान स्थिति में, भूमिपुत्र भी बेहाल हैं।
पीकर भूख को, पसीने से अन्न उगाते हैं।
एक सुखद भविष्य का स्वप्न,"आत्म–हत्या" संग से जाते हैं।
सरहद के जवान की तरह, किसान भी "लौह–पुरूष" हैं।
आंधी–तूफान में डटकर चलता, ये भला मानुष है।

भारत मां के गर्भ से, निकले हीरे–मोती हैं।
एक सीमा पर, एक भूमि पर...
दोनों ही महान हैं ...
एक बर्फ में दब गया, देश को बचाने के लिए।।
एक की मेहनत पर, मौसम की बर्फ गिर गई।।
जवान ने अंतिम सांस तक, हिम्मत न छोड़ी
ताकि मेरे देश की हिम्मत बनी रहे।
किसान ने, भूखे–पेट दूसरों के पेट भरने के लिए
स्वयं को मिटा लिया, पुर्नजन्म लेने के लिए,

क्यूं नही होता जग में, इन सबका गुणगान,
जननी–जन्मभूमि दोनों के ये सच्चे पुत्र हैं।
यही है इनकी सच्ची पहचान।
आज भी बेशक फ़िल्मी हस्तियां हैं, ज्यादा पूजनीय
फिर भी अनोखी है इनकी शान....
दिल की धड़कन नमन करती है....

"जय जवान–जय किसान"

जीने का आरक्षण

सुभाष, गांधी, भगत का बलिदान, जन–मानस का सम्मान
लड़े राष्ट्र–विकास के लिए, बड़े थे नादान
जीओ और जीने दो का नारा, आजकल है आवारा
आवारा हो गए सब नैतिक मूल्य, मानवता का हुआ भक्षण
पानी तो सब बचा लेंगे, विश्व युद्ध बनेगा "आरक्षण"

ना सिखाते शिशुओं को नैतिकता, विनाश के समीप है लक्षण
पैरों पे चलना बाद में सीखें, पहले मांगे "आरक्षण"
आरक्षण की आग पर रोटियां नहीं बनती,
केवल शमशान बिछते हैं, चरित्र का होता भक्षण।।

जाट, गुर्जर और पटेल, सरकार की कसें नकेल
झूठी शान की खातिर, सारी मर्यादाएं फेल
मुरथल, हरियाणा और गुजरात, जगह–जगह हाहाकार,
गरीबों की झोपड़ी पसीने से बनी है, अमीरों सुनो चीत्कार

क्या होगा यदि पशु–पक्षी भी मांगे आरक्षण,
समन्दर की लहरें किनारा भूलें, पवन भी सो जाए
धर्म भी अधर्मी हो जाएगा,
मन्दिर में शंखनाद होगा, मस्जिद भी सजदा करेगी
क्या गर्भ में पल रहा शिशु, फिर भी आरक्षित कहलाएगा

देना है अगर आरक्षण, तो हर बेटी–बहन को दो
हर नारी को मिले, दुर्गा–देवी का सम्मान
छूने से पहले कोई नापाक हाथ, अपने आप रूक जाएगा,
ये ईश्वर द्वारा आरक्षित कृति है, सर्वनाश हो जाएगा।

ऐ प्रकृति के दाता और विधाता, सुन ले मेरी विनती
अपने द्वारा रचित हर जीव को आरक्षित कर दे,
मिल जाए सभी को जीने का आरक्षण
नाश कर दे सभी अधर्मियों का,
या प्रकृति में प्रलय ला दे
बन जाए संसार, केवल जीवन और शांति के लिए "आरक्षित"

एस. विजयलक्ष्मी,
हिन्दी अधिकारी,
उद्योगमण्डल यूनिट, केरल

राष्ट्रीय एकता को प्रोत्साहित करने में हिन्दी का स्थान

नानात्व में एकत्व हमारे देश का महत्व है। भारत एक प्राचीन देश है जिसका गौरव अति प्राचीन काल से ही रहा है। भारत वर्ष एक विशाल गणराज्य है, इसमें से प्रथम भाषायिक विषय है। भारत में प्रचलित भाषाओं में ज्यादातर हिन्दी है। संस्कृत भाषा का विकास भी देश में हिन्दी के साथ–साथ रहा है। हिन्दी का विकास, संस्कृत से ज्यादा शब्दों एवं वाक्य संरचनाओं को स्वीकार करके ही संपन्न हो रहा है। हिन्दी के साथ अटूट संबंध उर्दू का है। अन्य भाषाओं से शब्दों को स्वीकार करके भाषा का विकास हो रहा है। भाषा विज्ञान एवं वाक्य रचना की दृष्टि से भी यह साबित हो गया है। भारत में बुंदेली, डिंगल, ब्रज, भोजपुरी, अवधि, तमिल, मराठी, गुजराती, बंगला आदि का विकास भी हो रहा है। केरल में प्रशासनिक शब्दों का प्रयोग आज हिन्दी या अंग्रेज़ी नहीं क्षेत्रीय भाषा मलयालम ही है। अतः यह स्पष्ट हो गया है कि विदेशी भाषा अंग्रेज़ी को हटाकर अपनी भाषा का प्रयोग अपनाने में राज्य सरकार ध्यान देने लगी है। यह अत्यंत गौरव की बात भी है। मातृभाषा का प्रयोग करने के लिए भी नियम लागू किया है। फिर भी मानना पड़ेगा कि नक्षत्रों के लोक में हिन्दी चन्द्रमा के समान ही है। हिन्दी भारत वर्ष की राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा है। सरल एवं सुगम भाषा बोलने वालों की संख्या ज्यादा है, हिन्दी की लिपि उच्चारण की बनावट के अनुकूल और उच्चारण में परिवर्तन नहीं। देश के बहुसंख्यक मनुष्यों की भाषा होने के कारण हिन्दी का दायित्व सर्वाधिक है। हमारे दिलों में हिन्दी के प्रति श्रद्धा की भावना विद्यमान रहनी चाहिए।

साहित्य में यह शक्ति रहती है जिसके द्वारा मानव में एक नई चेतना जागृत हो जाती है। हिन्दी साहित्य समृद्ध और अखंडता का आधार बना है। देश के संबंध में तो भारत देश में विविधता है। हिन्दू, सिक्ख, ईसाई, बौद्ध, पारसी एवं जैन आपस में समादर करते हुए रहते हैं।

देश में रीति–रिवाज़, आस्था एवं विश्वास के संदर्भ में भी कार्य संपूर्ण है। त्योहारों के बारे में तो होली, दीवाली, रक्षा बन्धन, दशहरा आदि कई राज्यों में बडी धूमधाम के साथ मनाया जाता है। शंकराचार्य एवं रामानुजाचार्य के प्रति दक्षिण एवं उत्तर भारत वासियों द्वारा सदा श्रद्धाभाव रखते हैं।

हिन्दी के माध्यम से एकता की भावना संपूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में लाती है। विशाल राष्ट्र भारत में विभिन्नताओं के होते हुए भी एकता की भावना पाई जाती है। विशाल भारतवासी आपस में भाई–भाई हैं।

हमारा देश एक गण राज्य है। लेकिन रीति–रिवाज़ तथा संस्कृति पूरे देश में एक समान नहीं। लेकिन भारतवासियों के मन में मैत्री की भावना सबको एक सूत्र में बाँधती है। देश पर आक्रमण होने पर संपूर्ण धर्म, संप्रदाय तथा जाति के लोग एकमत से शत्रु से लोहा लेने में जुट जाते हैं। राष्ट्र की सुरक्षा को महत्व प्रदान करते हैं।

पंजाबी, मद्रासी, बंगाली, मराठी, मलयाली, गुजराती आदि नाम से, बोलने वाली मातृभाषा के आधार पर जनता को अलग करने में जो बात राज्यों के पुनर्गठन में किया है वह तो देशवासियों के मन को अलग करने में सफल नहीं। उनके मन में ऐसी भावना है कि हम सब भारतीय है, भारतवर्ष के निवासी है।

हमें ज्ञात है कि हमारे देश में कई देशभक्त साहित्यकार और समाज सुधारक विद्यमान हैं। हिन्दी प्रेमी, कवि, लेखक आदि महद् व्यक्तियों के प्रयत्न से हिन्दी भाषा का विकास अत्यधिक हो गया है। हम भारतवासियों को राष्ट्रभाषा हिन्दी के बहुमुखी विकास के लिए प्राण–प्राण से जुट जाना चाहिए।

भारतवर्ष सदियों तक अंग्रेज़ों व अन्य विदेशियों का गुलाम रहा एवं विभिन्न विदेशी शासकों ने अपने देश की भाषा के माध्यम से शासन कार्यों को संचालित किया। यदि हम यथार्थ में राष्ट्रभाषा हिन्दी को विकास के पथ पर अग्रसर देखना चाहते हैं तो सबसे प्रथम हमें अंग्रेज़ी भाषा के एकाधिकार को समाप्त करना होगा। यहां अनेक प्रांतीय और स्थानीय भाषाएं प्रचलित हैं।

धर्म, रीति – रिवाज़, भाषा, संस्कृति, साहित्य आदि सभी क्षेत्रों में आदान–प्रदान करने के लिए भाषा विकसित होने की आवश्यकता है। अन्य भाषाओं से शब्दों को स्वीकार करके और तत्सम एवं तद्भव शब्दों के माध्यम से हिन्दी विकास की ओर अग्रसर होती है। कारोबार में, विज्ञान के क्षेत्र में भाषा को गरिमामय स्थान है। राजभाषा, राष्ट्रभाषा, जनसंपर्क की भाषा आदि के रूप में हिन्दी विकसित हो रही है। भारत में अखंडता लाने में सफल हो रही है।

जय हिन्द

हिंदी किसी एक प्रदेश की भाषा नहीं बल्कि देश में सर्वत्र बोली जाने वाली भाषा है। –विलियम केरी

संकलनकर्ता
शान्ति ध्रुव
सहायक प्रबंधक (हिन्दी),
मुख्यालय, नई दिल्ली

संघ की राजभाषा नीति

देश की स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् संविधान सभा जब संविधान का निर्माण कर रही थी तो यह निर्णय लिया गया कि संघ की राजभाषा देवनागरी लिपि में लिखित हिन्दी होगी। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 351 के अनुसार हिन्दी के प्रचार–प्रसार का दायित्व केन्द्र सरकार को सौंपा गया। अपने दायित्व का पालन करते हुए केन्द्र सरकार ने राजभाषा अधिनियम, 1963 पारित करवाया और इसकी धारा 3 (3) 26 जनवरी, 1965 से लागू हुई। धारा 3(3) के अन्तर्गत निम्नलिखित दस्तावेज़ भारत सरकार के सभी कार्यालयों में द्विभाषी रूप में जारी किए जाने आवश्यक हैं:–

1.	संकल्प	Resolutions
2.	सामान्य आदेश	General orders
3.	नियम	Rules
4.	अधिसूचनाएं	Notifications
5.	प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन	Administrative and Other Reports
6.	प्रेस विज्ञप्तियां	Press Communiques
7.	संसद के किसी सदन में रखे गए प्रशासनिक तथा अन्य प्रतिवेदन	Administrative and other Reports laid before any House of the Parliament
8.	संसद के किसी सदन में रखे गए राजकीय कागजात	Official papers to be laid beforeAny House of the Parliament
9.	संविदाएं	Contracts
10.	करार	Agreement
11.	अनुज्ञप्ति	License
12.	अनुज्ञा पत्र	Permit
13.	निविदा सूचना	Tender Notice
14.	निविदा प्रारूप	Tender Form

"सामान्य आदेश" की परिभाषा निम्नलिखित हैं:–

1. ऐसे सभी आदेश, निर्णय या अनुदेश जो विभागीय प्रयोग के लिए और स्थायी प्रकार के हों।
2. ऐसे सभी आदेश, अनुदेश, पत्र, ज्ञापन, नोटिस जो सरकारी कर्मचारियों के समूह के संबंध में या उनके लिए हों।
3. ऐसे सभी परिपत्र जो विभागीय प्रयोग के लिए हों या सरकारी कर्मचारियों के लिए हों।

राजभाषा नियमावली, 1976

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 8 द्वारा दी गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार ने राजभाषा नियम, 1976 तैयार किए। इस नियमावली में 12 नियम हैं जिनमें से मुख्य नियम निम्नानुसार हैं:–

1. **नियम 3 – केन्द्र सरकार के कार्यालयों द्वारा पत्राचार**

   केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से क तथा ख क्षेत्र में किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र को या किसी व्यक्ति को पत्र आदि सामान्यतः हिन्दी में भेजे जाएंगे।

2. **नियम 4 – केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्राचार**

   केन्द्र सरकार के किसी एक मंत्रालय या विभाग और किसी अन्य मंत्रालय या विभाग के बीच पत्रादि हिन्दी या अंग्रेज़ी में हो सकते हैं परन्तु हिन्दी पत्राचार वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप अवश्य होना चाहिए।

3. **नियम 5 – हिन्दी में प्राप्त पत्रों के उत्तर**

   केन्द्र सरकार के किसी कार्यालय में हिन्दी में प्राप्त पत्रादि के उत्तर हिन्दी में ही दिए जाएंगे।

4. **नियम 7 – आवेदन, अपील, अभ्यावेदन**

   कोई कर्मचारी आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी या अंग्रेज़ी में कर सकता है। यदि ऐसा आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी में किया गया हो या उस पर हिन्दी में हस्ताक्षर हों तो उसका उत्तर हिन्दी में दिया जाएगा।

   यदि कोई कर्मचारी यह चाहता है कि सेवा संबंधी विषयों में आदेश या सूचना, जिनका कर्मचारी पर तामील किया जाना अपेक्षित है, हिन्दी या अंग्रेज़ी में होने चाहिए तो उसे बिना विलम्ब उसी भाषा में दी जाएगी।

5. **नियम 8 – टिप्पणी लिखा जाना**

   कोई कर्मचारी किसी फाइल पर टिप्पण हिन्दी या अंग्रेज़ी में लिख सकता है और उससे उसका दूसरी भाषा में अनुवाद नहीं मांगा जाएगा, परन्तु तकनीकी या विधिक होने पर किसी हिन्दी दस्तावेज़ का अनुवाद मांगा जा सकता है, जिसका निर्णय कार्यालय के प्रधान द्वारा किया जाएगा। जो अधिकारी/कर्मचारी हिन्दी में प्रवीण हैं, उन्हें लिखित आदेश द्वारा अपना समस्त कार्य हिन्दी में करने के आदेश दिए जा सकते हैं।

6. **नियम 9 – हिन्दी में प्रवीणता**

   यदि किसी कर्मचारी ने मैट्रिक परीक्षा या उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिन्दी माध्यम से उत्तीर्ण की है या स्नातक परीक्षा में हिन्दी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में पढ़ा है या वह स्वयं घोषणा करता है कि उसे हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है, तो यह समझा जाएगा कि उक्त कर्मचारी ने हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त कर ली है।

7. **नियम 10 – हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान**

   यदि किसी कर्मचारी ने मैट्रिक की परीक्षा हिन्दी विषय के साथ उत्तीर्ण की है या सरकारी सेवा में प्राज्ञ परीक्षा उत्तीर्ण की है या वह स्वयं घोषणा करता है कि उसे हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त हो तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उक्त कर्मचारी को हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है।

   जब किसी कार्यालय के 80% कर्मचारियों ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया हो, उसका नाम भारत के राजपत्र में अधिसूचित करवाया जाएगा।

8. **नियम 11 – मैनुअल, संहिताएं, प्रक्रिया साहित्य, लेखन सामग्री आदि**

   केन्द्र सरकार के कार्यालयों में सभी मैनुअल, संहिताएं और प्रक्रिया साहित्य हिन्दी और अंग्रेज़ी में तैयार किये जाएंगे। कार्यालय में प्रयोग किए जाने वाले सभी रजिस्टरों के प्ररूप और शीर्षक हिन्दी और अंग्रेज़ी में होंगे।

   कार्यालय के प्रयोग के लिए सभी सूचना पट्ट, नाम पट्ट, पत्र शीर्ष, लिफाफे तथा बैनर द्विभाषी रूप में तैयार करवाए जाएंगे। सरकारी कार्यक्रमों एवं समारोहों के लिए निमंत्रण पत्र द्विभाषी रूप में तैयार करवाए जाएंगे तथा सभी विज्ञापन द्विभाषी रूप में दिए जाएंगे।

9. **नियम 12 – अनुपालन का दायित्व**

   कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह दायित्व होगा कि वह सुनिश्चित करें कि राजभाषा अधिनियम तथा नियमों का समुचित रूप से पालन हो। इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त और प्रभावी जांच के लिए उपाय किए जाने चाहिए तथा अधिनियम और नियमों के पालन के लिए अधिकारियों/कर्मचारियों को समय–समय पर आवश्यक निदेश दिए जा सकते हैं।

हिंदी के प्रयोग के लिए राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय) द्वारा जारी वर्ष 2016–17 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र. सं.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र		"ख" क्षेत्र		"ग" क्षेत्र	
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई–मेल, फैक्स, बेतार, संदेश सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ, राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	100% 100% 65% 100%	1. ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 2. ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 3. ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 3. ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ, राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	90% 90% 55% 100%	1. ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 2. ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 3. ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य संघ, राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	55% 55% 55% 85%
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना		100%		100%		100%
3.	हिंदी में टिप्पणी		75%		50%		30%
4.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती		80%		70%		40%
5.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं अथवा सहायक द्वारा)		65%		55%		30%
6.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)		100%		100%		100%
7.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना		100%		100%		100%
8.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजीटल वस्तुओं अर्थात हिंदी ई–पुस्तक, सीडी/डीवीडी,पेनड्राइव तथा अंग्रेज़ी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय		50%		50%		50%
9.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलैक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद		100%		100%		100%
10.	वैबसाइट		100% (द्विभाषी)		100% (द्विभाषी)		100% (द्विभाषी)
11.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन		100% (द्विभाषी)		100% (द्विभाषी)		100% (द्विभाषी)

12. (I) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./नि./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
(II) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
(III) विदेश में स्थित केन्द्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	**वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण**		
13. राजभाषा संबंधी बैठकें			
(क) हिंदी सलाहकार समिति	वर्ष में 02बैठकें (कम से कम)		
(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 02बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक)		
(ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 04 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)		
14. कोड, मैनुअल, फार्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद		100%	
15. मंत्रालय/विभाग/कार्यालय/बैंक/उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां सारा कार्य हिंदी में हो	"क" क्षेत्र 40%	"ख" क्षेत्र 30%	"ग" क्षेत्र 20%

(न्यूनतम अनुभाग)
सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहाँ अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं हो, "क" क्षेत्र में कुल कार्यक्षेत्र का 40%"ख" क्षेत्र में 25% और "ग" क्षेत्र में 15% कार्य हिंदी में किया जाए।

"सिल्वर अवॉर्ड" – राष्ट्रीय आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए उल्लेखनीय योगदान पर सामुदायिक विकास के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने पर एच.आई.एल को फेम उत्कृष्टता पुरस्कार 2016 प्राप्त हुआ

डा0 विशाल चौधरी
प्रबन्धक (तकनीकी),
मुख्यालय, नई दिल्ली

रिकॉर्ड उत्पादन तथा विस्तार संबंधी विवरण

1. कम्पनी की उद्योगमण्डल इकाई, जो कोच्चि में स्थित है, में मैन्कोजेब कैपेसिटी एक्सपेंशन वित्तीय वर्ष 2015–16 के माह दिसम्बर, 2015 में प्रारम्भ हो गया है। अब मैन्कोजेब प्लांट की उत्पादन क्षमता 2000 मीट्रिक टन प्रतिवर्ष हो गई है। इससे अनुमानतः 14 करोड़ रूपये प्रतिवर्ष कारोबार में वृद्धि होने की सम्भावना है।
2. कम्पनी की उद्योगमण्डल इकाई में, सर्वोच्च न्यायलय द्वारा अन्तरिम प्रतिबंध के बाद से निष्क्रिय पड़े एंडोसल्फान को आवश्यक परिवर्तन करके ग्लाइफोसेट उत्पादन के लिए तैयार कर लिया गया है। इसकी उत्पादन क्षमता 500 मीट्रिक टन प्रतिवर्ष है। इससे अनुमानतः 22 करोड़ रूपये प्रतिवर्ष कारोबार में वृद्धि होने की सम्भावना है।
3. कम्पनी की रसायनी इकाई, जो महाराष्ट्र में स्थित है, में वित्तीय वर्ष 2015–16 में, मल्टीप्रोडक्ट प्लांट के अन्तर्गत इमिडाक्लोप्रिड का वाणिज्यिक उत्पादन सफलतापूर्वक आरम्भ हो गया है।

संकलक : श्री एन.एम. वाघमारे,
हिन्दी सहायक (वि.श्रे),
रसायनी यूनिट, महाराष्ट्र

परमपूज्य महामानव डॉ बाबा साहब अंबेडकर की जीवन-यात्रा

1891 – जन्म, 14 अप्रैल, महू, मध्य प्रदेश

1907 – मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण

1908 – रमाबाई से विवाह

1912 – बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण, मुंबई विश्वविद्यालय से

1913 – उच्च शिक्षण प्राप्त करने हेतु अमेरिका प्रस्थान

1915 – कोलंबिया विद्यापीठ से एम.ए.

1916 – पी.एच.डी. की उपाधि के लिए प्रबंध सादर किया (विषय– प्राचीन भारत में व्यापार, उपाधि सन् 1924 में मिली)

1917 – लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स एंड पॉलिटिकल साइंस में प्रवेश

1917 – भारत वापसी, बड़ौदा राज्य में सेवारत

1918 – मुंबई के सिन्डहैम कालेज में प्रध्यापक

1920 – ''मूकनायक'' पाक्षिक की मुंबई में शुरूआत

1920 – पुनः लंदन की यात्रा

1921 – एम.एस.सी. (अर्थशास्त्र) की पदवी प्राप्त की

1922 – बैरिस्टर की परीक्षा उत्तीर्ण

1923 – भारत वापसी (14 अप्रैल को)

1924 – बहिष्कृत हितकारणी सभा का कार्य आरंभ किया

1927 – मुबई विधि–मंडल में चयन

1927 – महाड़ चावदार तालाब सत्याग्रह (जिला– रायगढ़, महाराष्ट्र), 20 मार्च (सार्वजनिक तालाब से दलितो के पानी भरने/पीने के हक के लिए आंदोलन)

1927 – ''बहिष्कृत–भारत'' का पहला अंक प्रकाशित

1928 – मुंबई के शासकीय महाविद्यालय में प्रध्यापक

1930 – मंदिर में प्रवेश (कालाराम मंदिर) के लिए आंदोलन, 2 मार्च, यह आंदोलन 13 अक्तूबर, 1935 तक चला

1932 – पूना करार, 24 सितंबर

1935 – धर्मपत्नी रमाबाई का निधन, 27 मई

1935 – मुंबई के शासकीय महाविद्यालय के प्राचार्य पद पर नियुक्ति (02 जून) एवं इस पद पर 1938 तक कार्य किया

1935 – धर्मान्तरण की घोषण (येवला, जिला–रायगढ़, महाराष्ट्र), 13 अक्टूबर

1936 – स्वतंत्र मज़दूर पक्ष की स्थापना

1937 – प्रांतीय विधि मंडल में प्रवेश

1942 – वॉयसराय के कार्यकारी मंडल में लेबर मिनिस्टर नियुक्त (जुलाई में) एवं 1946 तक कार्यकारी मंडल में रहे

1946 – मुबई में सिद्धार्थ महाविद्यालय की स्थापना (20 जून)

1946 – संविधान सभा की पहली बैठक (9 दिसंबर)

1947 – स्वतंत्र भारत के पहले मंत्री मंडल में कानून–मंत्री नियुक्त (15 अगस्त, 1947)

1948 – संविधान का मसौदा पूरा किया (फरवरी माह में)

1948 – डॉक्टर सविता कबीर से विवाह (15 अप्रैल)

1950 – कोलंबो (श्रीलंका) में बौद्ध परिषद में भाग लिया (25 मई)

1951 – संसद में हिंदू कोड बिल प्रस्तुत किया, 05 फरवरी

1951 – केन्द्रीय कानून मंत्री के पद से त्यागपत्र, 27 सितंबर

1952 – कोलंबिया विश्वविद्यालय ने एक विशेष समारोह आयोजित कर के एल.एल.डी की मानद उपाधि प्रदान की, 5 जून

1953 – उस्मानिया विश्वविद्यालय ने डी.लिट. की मानद उपाधि प्रदान की, 15 जनवरी

1954 – रंगून (म्यांमार) में जागतिक बौद्ध परिषद में भाग लिया

1956 – नागपुर में 14 अक्तूबर को बौद्ध धर्म ग्रहण किया व भिक्कू चन्द्रमणाजी से दीक्षा लेकर फिर लाखों लोगों को स्वयं दीक्षा दी

1956 – महापरिनिर्वाण, 6 दिसंबर को, 26 अलीपुर रोड़ नई दिल्ली में

भारत के संविधान निर्माता, महामानव, भारत रत्न डॉ भीमराव रामजी अंबेडकर, बाबा साहब की स्मृति को सादर अभिवादन

सेवानिवृत्ति/स्वेच्छा सेवानिवृत्ति एवं त्याग पत्र के अवसर पर एच.आई.एल. परिवार अपने निम्नलिखित अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सुखद भविष्य, उत्तम स्वास्थ्य एवं समृद्धि की कामना करता है।

(अप्रैल, 2016 से सितम्बर, 2016 तक सेवानिवृत्त/स्वेच्छा सेवानिवृत्त/त्याग पत्र प्राप्त अधिकारी एवं कर्मचारी)

क्र. सं0	नाम (सर्वश्री / श्री / श्रीमती / कु0)	तैनाती स्थान
1.	रनवीर सिंह	बठिंडा यूनिट
2.	जगदीश कुमार चड्ढा	बठिंडा यूनिट
3.	किशोरी पोद्दार	बठिंडा यूनिट
4.	भगवान दास	बठिंडा यूनिट
5.	श्री राम सिंह	बठिंडा यूनिट
6.	सुरेश चंद रमोला	बठिंडा यूनिट
7.	विष्णु देव पासवान	बठिंडा यूनिट
8.	राज कृष्ण गुप्ता	बठिंडा यूनिट
9.	राम किशोर	बठिंडा यूनिट
10.	विजय एस. आवटे	बठिंडा यूनिट
11.	मंगल सेन	बठिंडा यूनिट
12.	सुलेमान	बठिंडा यूनिट
13.	पारस राम पाण्डेय	बठिंडा यूनिट
14.	शेलार पी.बी.	रसायनी यूनिट
15.	नवरेकर एच.के.	रसायनी यूनिट
16.	माली एच.एम.	रसायनी यूनिट
17.	कटकर के.एस.	रसायनी यूनिट
18.	गाताडे डी.एम.	रसायनी यूनिट
19.	पाटिल एन.एस.	रसायनी यूनिट
20.	भेंडे वी.बी.	रसायनी यूनिट
21.	ठाकूर एल.ए.	रसायनी यूनिट
22.	गाताडे टी.डी.	रसायनी यूनिट
23.	भोइर ए.जे.	रसायनी यूनिट
24.	ठाकुर एस.पी.	रसायनी यूनिट
25.	दराडे एस.जी.	रसायनी यूनिट
26.	गोपाले पी.एम.	रसायनी यूनिट
27.	चव्हाण डी.बी.	रसायनी यूनिट
28.	कुरंगले एस.डी.	रसायनी यूनिट
29.	म्हात्रे एम.सी.	रसायनी यूनिट
30.	मोकल वी.जे.	रसायनी यूनिट
31.	पाटील आर.बी.	रसायनी यूनिट
32.	घरत एन.सी.	रसायनी यूनिट
33.	ठाकूर एस.ई.	रसायनी यूनिट
34.	ठाकूर एल.के.	रसायनी यूनिट
35.	ठाकूर आर.एम.	रसायनी यूनिट
36.	म्हात्रे ए.एस.	रसायनी यूनिट
37.	थले डी.जे.	रसायनी यूनिट
38.	पाटील एन.पी	रसायनी यूनिट
39.	म्हात्रे के.वी.	रसायनी यूनिट
40.	पाटील डी.आर.	रसायनी यूनिट
41.	सूर्यराव एस.एस.	रसायनी यूनिट
42.	तुरे एन.बी.	रसायनी यूनिट
43.	कोली ई.के.	रसायनी यूनिट
44.	पागडे सी.एल.	रसायनी यूनिट
45.	शेख एम.आई.	रसायनी यूनिट
46.	लाखन एन.डी.	रसायनी यूनिट
47.	म्हात्रे एल.के.	रसायनी यूनिट
48.	मोरे जी.टी.	रसायनी यूनिट
49.	पोवले सी.वी	रसायनी यूनिट
50.	शेलार ए.एस.	रसायनी यूनिट
51.	पाटील एम.एम.	रसायनी यूनिट
52.	म्हात्रे एम.के.	रसायनी यूनिट
53.	गाताडे एच.के.	रसायनी यूनिट
54.	गायधने आर.एम.	रसायनी यूनिट
55.	गायकवाड वी.एन.	रसायनी यूनिट
56.	पालकर एन.एच.	रसायनी यूनिट
57.	भोजने सी.डी.	रसायनी यूनिट
58.	योहन्नान पी सी	उद्योगमण्डल यूनिट
59.	अब्रहाम के पी	उद्योगमण्डल यूनिट
60.	वनजामणी पी टी	उद्योगमण्डल यूनिट
61.	उण्णिकृष्णन वी एन	उद्योगमण्डल यूनिट
62.	एल्दो मात्यू	उद्योगमण्डल यूनिट
63.	ई के वेणुगोपाल	उद्योगमण्डल यूनिट
64.	टक्किलापति प्रमिला रानी	क्षेत्रीय ब्रिकी कार्यालय (हैदराबाद)
65.	लक्ष्मी भिक्कू	क्षेत्रीय ब्रिकी कार्यालय (हैदराबाद)
66.	तपन कुमार दास	क्षेत्रीय ब्रिकी कार्यालय(कोलकाता)
67.	वाई. पी. महतो	अनुसंधान एवं विकास केन्द्र
68.	एच.आर. पाण्डेय	अनुसंधान एवं विकास केन्द्र

हिन्दुस्तान इन्सेक्टिसाइड्स लिमिटेड

(भारत सरकार का उद्यम)

निगमित कार्यालय

द्वितीय मंजिल, कोर–6, स्कोप काम्पलैक्स, 7 लोदी रोड, नई दिल्ली – 110003

दूरभाषः 24362100, 24361107, फैक्सः 24362116

ई–मेलः hilheadoffice@gmail.com वेबसाइटः www.hil.gov.in

संयंत्र

अलवॉय : उद्योगमंडल, एल्लोर पो.ओ., एरनाकुलम जिला, केरल– 683501
दूरभाष : 0484 – 2545217, फैक्स : 0484–2545464, ई–मेल : udl@hil.gov.in, hiludl@dataone.in

रसायनी : रायगढ़ जिला, महाराष्ट्र–410207, दूरभाष : 02192–250391, फैक्स : 02192–250392
ई–मेल : rasayani@hil.gov.in, hilrasayani@bsnl.in

बठिंडा : ए–4 इन्डस्ट्रियल ग्रोथ सेन्टर, मनसा पटियाला रोड, बठिंडा, पंजाब– 151001
दूरभाष : 0164 – 6533050, फैक्स :0164–2430099, ई–मेल : bathinda@hil.gov.in, bathinda@gmail.com

अनुसंधान एवं विकास कॉम्पलैक्स

सेक्टर 20, उद्योग विहार, गुडगांव, हरियाणा–122016 दूरभाषः 0124–2341674

ई–मेलः rd@hil.gov.in, hilrd2009@gamil.com

क्षेत्रीय बिक्री कार्यालय

नई दिल्ली	:	दूरभाष	:	011–25938757,	ई–मेल	– hilnor@nde.vsnl.in
कोलकाता	:	दूरभाष	:	033–23557930,	ई–मेल	– hileast@cal2.vsnl.in
अहमदाबाद	:	दूरभाष	:	079–27682520,	ई–मेल	– hiland@gmail.com
नागपुर	:	दूरभाष	:	0712–2240664,	ई–मेल	– hilakl@rediffmail.com
हैदराबाद	:	दूरभाष	:	040–23234098,	ई–मेल	– hyd2_hilsouth@sancharnet.in
कोयम्बटूर	:	दूरभाष	:	0422–2425235,	ई–मेल	– hilcom@giasmd01.vsnl.net.in
बैंगलोर	:	दूरभाष	:	080–23164744,	ई–मेल	– hilbangalore@yahoo.com